हरियाणा विधान सभा

की

कार्यवाही

5 मई, 1975

खण्ड 2, अंक 1

अधिकृत विवरण

विशय सूची

सोमवार, 5 मई, 1975

	पृश्ठ संख्या
तारांकित प्र न एवं उत्तर	(1) 1
नियम 45 के अधीन सदन के मेज पर रखे गए	
तारांकित प्र न का लिखित उत्तर	(1) 23
भाोक प्रस्ताव	(1) 25
अध्यक्ष द्वारा घोशणाएं–	(1) 36
(क) सभापति तालिका	(1) 36
(ख) याचिका समिति	(1) 37
सदन के मेज पर रखे गए/पुनः रखं गए कागज पत्र	(1) 38
सचिव द्वारा घोशणाएं	(1) 38
अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित जातियों के कल्याण	

संबंधी समिति का द्वितीय प्रतिवेदन पे ा करना (1) 39

सरकारी संकल्प– (1) 40

दी फरीदाबाद कम्पलैक्स (रैगुले ान एंड डिवैल्पमैंट) अमैंडमैंट एंड वैलीडे ान बिल, 1975 (1) 52

दी पंजाब अरबन इम्मूवबल प्रापर्टी टैक्स (हरियाणा अमैंडमैंट) बिल, 1975 (1) 59

दी इंडियन इलैक्ट्रिसीटी (हरियाणा अमैंडमैंट एंड वैलीडे ान) बिल, 1975 (1) 65

हरियाणा विधान सभा

सोमवेार, 5 मई, 1975

विधान सभा की बैठक, हरियाणा विधान सभी हाल, विधान भवन,

सैक्टर–1, चण्डीगढ़ मे 14.00 बजे हुई। अध्यक्ष

(चौधरी सरूप सिंह) ने अध्यक्षता की।

Mr. Speaker: The Question Hour.

तारांकित प्र न एवं उत्तर

Rationed Course Cloth

***1343. Chaudhri Shiv Ram Verma:** Will the Minster for Excise and Taxation be pleased to state-

(a) the quantity of rationed coarse cloth, if any, distributed in the State and also district wise, separately, during the period between 1-14-1974 to 31-3-1975;

(b) the quantity if any, of the said cloth fixed for distribution per capita per annum;

(c) whether the people of every village in the State are being supplied the said cloth in full quantity;

(d) if not, the reasons therefore; and

(e) the arrangements made to make the said cloth available in every village?

Excise and Taxation Minister (Sh. Shyam Chand):

(a) A Statement containing the requisite information is placed on the table of the House.

(b) No. quantity has been fixed for distribution on per capita per annum basis but 10 meters of cloth per ration card per quarter is being allowed.

(c) 198 retail depots of controlled cloth are functioning at present in the rural areas from where the consumers are entitled to draw 10 meters of controlled cloth per ration card in every three months, within the over all allocations given by the Government of India.

(d) In view of reply at (c) above, question does not arise.

(e) 198 retail depots of controlled cloth have already been setup in rural areas and instructions have been issued to ensure that every block has four such depots.

Statement showing No. of bales of controlled cloth on bale consists of 1500 (approximately) meters distributed in Haryana, District wise and month wise from April 1974 to March 1975.

Sr. No.	Name of District	April 1974	May 1974	June 1974	July 1974	Aug. 1974	Sep. 1974	Oct. 1974	Nov. 1974	Dec. 1974	Jan. 1975	Feb. 1975	March 1975	Total
1	Ambala	52	98¼	151¾	153 ½	93	104	80	69	64	116	241	155½	1378
2	Bhiwani	33 ¼	58	91¼	79	59¼	64	47	43	40	75	144	101	834¾
3	Gurgaon	63	119 ¼	178	164 ¾	108 ½	119	92	76¾	59¾	102	209¼	136½	1428¾
4	Hissar	41¾	138	229½	189 ¼	130	146	117	93	84½	146	265	176¾	1756¾
5	Jind	30½	60¾	96	90	10¼	70½	56	45	36	81¾	163	70	859¾
6	Karnal	52	99	163	153	101	107	91	71	68	116	220	128½	1369½

7	Kurukshetra	52	80	134	118¾	70	84¾	72	51½	44	95¾	187½	150	1140¾
8	Narnaul	31	74	133	111½	70½	85	69	55¼	50	89	153	159½	1080¾
9	Rohtak	38	84	128	101¼	71½	76	60	51	46	84	186½	106½	1032¾
10	Sonepat	42	53	86	70	49	95	76	60½	42	81	153	104½	912
Total		435½	864¼	1390½	1231	813	951¼	760	616	534¼	986½	1922¼	1288¾	11973¼

तारांकित प्र न एवं उत्तर

(इस समय चौधरी देवी लाल तथा चौधरी हरस्वरूप सिंह बुड़ा सदन मे आये।

अपोजी ान बैंचिज की और से थम्पिंग।)

चौधरी ि ाव राम वर्मा: जैसा कि अभी मंत्री महोदय ने अपने जवाब मे कहा है कि डिस्ट्रिब्यू ान की कोई क्वांटिटी फिक्स नही की हुई है, यानी कि पर व्यक्ति कितना कपड़ा दिया जायेगा उसकी मिकदार तय नही की हुई है तो मैं मिनिस्टर साहब से यह जानना चाहता हूं कि जो एक रा ान कार्ड पर दस मीटर क्वाटरली फिक्स किया हुआ है, क्या उससे उनका काम चल जायेगा ?

श्री भयाम चंद: हमें हर महीने 810 बैल्ज मिलती है। एक बेल मे 1500 मीटर कपड़ा होता है। हमें जितना ज्यादा कपड़ा मिलेगा हम उतना ही ज्यादा लोगों को देंगे। पहले हमें केवल 405 बेल्ज ही मिलते थे, अब हमने बढ़वाये है।

चौधरी राम लाल वधवा: क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि जितना कपड़ा आता है, क्या देहाती और भाहरी इलाकों के लिए कोई क्राइटेरिया रखा हुआ है कि इतना कपड़ा देहाती इलाके को दिया जायेगा और इतना भाहरी इलाके को दिया जायेगा ?

Shri Shyam Chand: Sir, the question pertains to rural areas.

चौधरी ि ाव राम वर्मा: जैसा कि अभी मंत्री महोदय ने अपने जवाब मे पढ़ा है कि सारे हरियाणा मे 198 डिपों खोले हुए है। सारे हरियाणा मे तो 6670 गांव है तो इन 198 डिपुओं से कैसे काम चलेगा ? क्या उन्होंने यह महसूस नही किया है कि इन डिपुओं से काम नही चलेगा ? तो मै उनसे यह पूछना चाहता हूं कि एक डिपो पर अगर दस–पंद्रह गांव होंगे तो दस मीटर कपड़ा लेने के लिए कौन जायेगा ? हरेक गांवों मे डीपों का प्रबंध क्यों नही कर रहे है ?

श्री भयाम चंद: जैसा कि अभी मैंने बताया है कि 810 बेल्ज हमें हर महीने मिलती है। अगर छः हजार डिपों खोल दें तो पांच–पांच गज कपड़ा भी नही आता है।

चौधरी दलसिंह: स्पीकर साहब, क्वै चन का जवाब तो मिनिस्टर साहब के पास होता है या गवर्नमैंट के पास होता है। हमे तो उस जवाब का पता ही नही होता है। मिनिस्टर साहब को सवाल का जवाब तो पूरा पढ़ना चाहिए। जब तक हमे जवाब का ही पता नही होगा तो हम क्वै चन क्या पूछेंगे ?

श्री भयाम चंद: क्वै चन तो लिस्ट मे दिया है और उसक जवाब मैंने पढ़कर सुना दिया है।

चौधरी राम लाल वधवा: क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि एक डिपो कितने गांवों को कवर करता है ?

श्री भयाम चंदः स्पीकर साहब अब हरियाणा में कुल 198 डिपों देहातो मे है। हमने डी.सी. को चिट्ठी लिखी है कि एक ब्लाक मे चार डिपों होने चाहिए। इस तरह से सारे हरियाणा मे चार सौ डिपों खुज जायेंगे। दो बेल्ज एक डिपों पर जायेंगी।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि देहातों मे जो कपड़ा मिलता है यह बहु थोड़ा मिलता है। एक गरीब आदमी को जो चीज पूरी मिलती ही नही है, उसका क्या लाभ है ? दस मीटर से उसकी जरूरत पूरी नही होती है। क्या कभी सरकार ने कोि ा ा की है कि उनकों पूरा कपड़ा दिया जाये, जितनी उनकी जरूरत है ?

श्री भयाम चंदः पहले प्राइवेट मिल वाले मैनुफैक्चर करते थे और पेपर्ज मे भी प्राइम मिनिस्टर ने अपने कुमैंटस दिये है कि कोर्स क्लौथ बनाया जाये। It is like a bandage material इसके बाद पब्लिक सैक्टर मे टैक्सटाइल मिले है उनको आदे ा दिये है कि कोर्स कपड़ा ज्यादा से ज्यादा मैनफैक्चर करें ताकि कौमन आदमी के पास ज्यादा से ज्यादा पहंचे।

चौधरी पीर चंदः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि हिसार जिले मे जो डिपो खोले है उनमे से कुल कितने चालू है ?

श्री भयाम चंदः हिसार मे 24 डिपों है।

राव बंसी सिंहः क्या मंत्री महोदय बतायेंगें कि एक डिपों कितने मील के फासले पर खोला हुआ है ? क्या इसके लिए कोई क्राइटेरिया मुकर्रर करेंगे ?

श्री भयाम चंदः हमने डी.सीज. को चिट्ठी लिखी है कि एक ब्लाक मे चार डिपों खोले जाए।

श्री गिरी ा चंद्र जो ीः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि उनके पास यह डिपार्टमैंट के पास कपड़े की डिस्ट्रिब्यू ान के बारे मे कोई ि ाकायते आयी है, यदि आयी है तो कितनी आयी है और उन पर क्या कार्यवाही की गई है ?

श्री भयाम चंदः किसी एम.एल.ए. ने तो कोई चिट्ठी लिखी नहीं है।

चौधरी दलसिंहः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि जो डिपों खोल रखे है उन पर रैगुलर सप्लाई है या नही ? अगर रैगुलर सप्लाई नही है तो क्या कोई आ वासन देंगे कि फलां टाईम तक रैगुलर सप्लाई भुरू कर देंगे ?

श्री भयाम चंदः अध्यक्ष महोदय मैने बताया है कि पर मन्थ हमे 810 बेल्ज मिलती है वही हम दे देते है। हमने अपनी परसनल ऐफटर्स से मार्च, 1975 मे 1288 बेल्ज लिए है, फरवरी, 1975 मे 1922 बेल्ज ओर जनवरी, 1975 मे 986 बेल्ज लिए है और आये महीने हम पूरा कोटा लेते है। पिछले महीने डायरैक्टर सप्लाईज ने 1055 बेल्ज के लिए जिनमे धोती के जोड़े है, जो हम

फार्मर्ज को बोनस के रूप मे देंगे, गवर्नमैंट आफ इंडिया से कुमिटमैंट ली है। इस तरह से हम कोि ा ा कर रहे है।

श्रीमती चन्द्रावतीः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि क्या कन्ट्रोल का कपड़ा हर डिपों पर जाता है ? अगर हर डिपों पर जाता है तो क्या हर कार्ड होल्डर को मिलता है ?

श्री भयाम चंदः हर डिपों पर जाता है पर हर कार्ड होल्डर को नही मिलता क्योकि कपड़े की कमी है।

श्री के.एन. गुलाटीः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि कोर्स कपड़े की कमी को देखते हुए तीन सौ रूपये तक की आमदनी वाले को यह कपड़ा दे दिया जाये और ज्यादा वाले को न दिया जाये, ऐसी कोइ तजवीज करेंगे?

श्री भयाम चंदः देहातों मे तो सारे ही गरीब आदमी होते है। उन सभी को देना पड़ता है।

चौधरी ि िव राम वर्माः क्या वजीर साहब बतायेंगे, जैसा कि उन्होंने कहा है कि कपड़ा मिलों को कहा गया है कि वे कोर्स कपड़ा बनाये ताकि गरीबो को दिया जा सके। तो मै यह जानता हूं कि हरियाणा मे जो कपड़े की मिले है उन्होंने कितना कोर्स कपड़ा बनाया है ?

श्री भयाम चंदः हरियाणा मे कितना कपड़ा मिलता है, उसका मैंने जवाब दे दिया है। हरियाणा मे कितना कपड़ा मिलें

बनाती है, यह इन्डस्ट्री मिनिस्टर साहब से पता करे। मेरा सब्जैक्ट नही है।

Irrigation Projects

***1332. Chaudhri Mehar Chand:** Will the Minister for Irrigation and Power be pleased to state—

(a) the details of irrigation projects completed during the periods from 1-11-1966 to 31-5-1968 and from 1-6-1968 to 31-3-1975, separately: and

(b) the acreage of land brought under irrigation annually by each such project during the periods referred to in part (a) above?

State Minister for Irrigation & Power (Sardar harmohinder Singh Chatha):

(a) A statement is placed on the table of the House.

(b) A statement is placed on the table of the House.

Statement for part (a)

i. Irrigation projects completed from 1-1-1966 to 31-5-1968

ii. Irrigation projects completed from 1-1-1968 to 31-5-1975, are :-

1. Jui lift Irrigation Scheme.

2. Indira Gandhi Lift Irrigation Scheme State-I.
3. Birendra Narain Chakravarty lift Irrigation Scheme, State I.II and III.
4. Jhajjar lift Irrigation scheme (part of Jawahar Lal Nehru Lift Irrigation scheme).
5. The Augmentation Canal.
6. Lined parallel Delhi Branch.
7. Bhakra Main Line Barwala Link.
8. Installation of 100 augmentation tubewells along Western Yamuna Canal.
9. Installation of 128 augmentation tubewells along Delhi Parallel branch.
10. Installation of 100 augmentation tubewells along Bhakra Main Branch and Ratia Branch.

Statement for part (b)

The acreage of land, brought under irrigation annually, by the completed projects, during the periods referred to in part (ii) is as under: -

		Year	(in acres/hectares)			
	Name of Scheme	1970-71	1971-72	1972-73	1973-74	1974-75
1	Jui lift irrigation	633/	6459/	11108/	12984/	15136/

	scheme	256	2614	5495	5254	6125
2	Indira Gandhi lift irrigation scheme	---	4254/ 1722	13279/ 5374	20838/ 8433	24239/ 9809
3	Birendera Narain Chakravarty lift irrigation scheme	---	--	3482/ 1409	11056/ 4474	16641/ 6734
4	Jhajjar lift irrigation scheme (Part of Pandit Jawahar Lal Nehr lift irrigation scheme)	---	--	--	4066/ 1645	1197/ 484
5	Augmentation Canal	No direct irritation from this scheme.				
6	Lined parallel Delhi Branch	No direct irritation from this scheme.				
7	Bhakra Main Line Barwala Link	No direct irritation from this scheme.				
8	Installation of 100 augmentation	No direct irritation from this scheme.				

	tubewells along Nerawna Branch		
9	Installation of 128 augmentation tubewells along Western Yamuna Canal	No direct irritation from this scheme.	
10	Installation of 100 augmentation tubewells along Delhi Parallel Branch	No direct irritation from this scheme.	
11	Installation of 110 augmentation tubewells along Bhakra Main Branch and Ratia Branch	No direct irritation from this scheme.	

तारांकित प्र न एवं उत्तर

चौधरी दलसिंहः मेरी जो सवाल का जवाब है उसको पूरा पढ़ दिया करे। सप्लीमेंटरी तो तभी पूछेंगे जब वे पूरा जवाब पढ़ेंगे।

श्री अध्यक्षः इस क्वै चन का पूर जवाब पढ़ दें।

(इस समय तारांकित प्र न सं. 1332 के (क) तथा (ख) भागों के उत्तर मे सदन की मेज पर रखे गए विवरण सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठा ने पढ़े।)

चौधरी दलसिंहः क्या मिनिस्टर साहब यह बताने की कृपा करेंगे कि आपने ये जो प्रोजैक्टस बनाये है, इनकी मेनटेनैन्स पर एक साल मे तकरीबन कितना रूपया खर्च आता है ?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, अभी मेंटेनैंस के खर्च के बारे मे नही बता सकते क्योंकि जब–जब मेन्टेनैंस की जरूरत होगी, खर्च किया जायेगा। किसी का साल बाद मेन्अेनैंस होगा तो किसी का छः महीने बाद, और फिर ये सब नयी स्कीमें है। जब इनकी मेन्टेनैंस भाुरू करेंगे तब इसकी इन्फर्मे ान दी जा सकेगी लेकिन अभी यह इन्फर्मे ान अवेलेबल नही है।

चौधरी दलसिंहः क्या मिनिस्टर साहब यह बताने की कृपा करेंगे कि आपने जो यह प्रोजैक्टस बताये है इनसे 1973–74 में प्रोजैक्टवाईज कितने एरिया की इरीगे ान हुई है ?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः 1973.74 वर्श की इन्फर्मे ान इस प्रकार हैः जुई लिफ्ट इरीगे ान स्कीम : 5254 हैक्टेयर्ज, इन्दिरा गांधी लिफ्ट इरीगे ान स्कीम : 8433 हैक्टेयर्ज, वीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती लिफ्ट इरीगे ान स्कीम : 4474 हैक्टेयर्ज, और झज्जर लिफ्ट इरीगे ान स्कीम : 1645 हैक्टेयर्ज।

Chaudhri Mehar Chand: May I know from the Hon. Minister as to what new projects are in progress and are to be taken in hand during the current financial year and what additional gross area is likely to be irrigated from such projects?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः सर, ये जो प्रौजैक्टस है इनके मुताल्लिक यह इन्फर्मे ान है कि जो कल्चरेबल कमान्डेबल एरिया होगा वह जुई कैनाल का 26,563 हैक्टेयर, इन्दिरा गांधी कैनाल का 1 लाख 6,715 हैक्टेयर, बिरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती कैनाल का 73,563 हैक्टेयर और झज्जर लिफ्ट इरीगे ान स्कीम का 11,655 हैक्टेयर।

चौधरी मेहर चंदः स्पीकर साहब, मेरा जो प्वायंट था, वह आनसर नही हुआ। मैंने यह पूछा था कि आपने कम्पलीट प्रोजैक्टस की पिक्चर तो दे दी है लेकिन इसके अलावा भी क्या

कोई प्रौजैक्स हरियाणा मे इन हैंड है, अगर है तो वह कौन से है औरउनसे कितना एरिया इरीगेट होने का इमकान है ?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, ये प्रोजैक्टस कम्पलीट होने के बाद इनकी कैपेसिटी रेज की जा रही है और इ स वजह से उनमु कुछ पानी ऐक्सट्रा भी जायेगां हांसी ब्रांच की लाइनिंग कम्पलीट हो जायेगी तो 50 क्यूसिक्स पानी उससे बचेगा। जो जो नहरे लाइनिंग हो चुकी है, वह तो हमने बता दी है जौसे कि बुटाना की लाइनिंग in progress है और हांसी की बिल्कुल थोड़ी सी रह रही है।

चौधरी मनफूल सिंहः क्या मंत्री महोदय यह बतायेंगे कि इन सब प्रौजैक्टस के बनाने पर total cost of construction कितना आया ?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, कास्ट का टोटल तो मैंने नही किया है, हरेक प्रौजैक्ट का अलग अलग खर्च बता देता हूं। जूई लिफ्ट इरीगे ान स्कीम 3 करोड़ 31 लाख, इंदिरा गांधी इरीगे ान स्कीम 16 करोड़ बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती लिफ्ट इरीगे ान स्कीम 14 करोड़ और झज्जर लिफ्ट इरीगे ान स्कीम 1 करोड़ रूपया।

चौधरी देवी लालः स्पीकर साहब, क्या मैं सरकार से यह पूद सकता हूं कि इन प्रौजैक्टस के अलावा भी राजस्थान कैनाल से पून के महीने मे कुछ पाली पम्प आउट करने की स्कीम

बनायी गयी थी जिसके तहत चार–पांच कैनाल्ज पर पम्प रेट किये थे, एक महीने तक पानी चला लेकिन बाद मे नही चला ? क्या ऐसी कोई स्कीम है जिससे कि राजस्थान कैनाल से हरियाणा को पानी दिया जा सके ? (व्यवधान)

सिंचाई एवं बिजली मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त): अध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि फलड डेज में जब पौंग डैम मे तीन लाख एकड़ फीट पानी जमा हो गया और उसको राजस्थान व पंजाब, दोनो प्रदे ा यूटेलाईज नही कर पाये और उलटे उनको यह खतरा हो गया कि यह पानी हमारी फसलों को डैमेज करेगा तो राजस्थान सरकार ने हमसे बात की कि अगर आप पानी यूटेलाईज करना चाहे तो कर सकते है।

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal): I would like to intervene. मेरा यह ख्याल है कि जिन आनरेबल मैंबर्ज को यह इंफर्मे ान लेनी हो वे प्राइवेटली इरीगे ान एंड पावर मिनिस्टर से ले लें। It will not be in the interest of the State to disclose it on the floor of the House.

चौधरी देवी लाल: चार–पांच नहरो मे पानी चलता रहा है लेकिन फिर वह बन्द हो गया, इसका कारण क्या है, हम सिर्फ इतना ही पूछना चाहते है ?

चौधरी बंसी लाल: स्पीकर साहब, हमे कारण बगैरा बताने मे कोई एतराज नही है। आनरेबल मैम्बर इरीगे ान एंड पावर मिनिस्टर से प्राइवेट तौर पर पूछ लें, वे सब नहरों की

डिटेल तौर पर पूछ ले, वे सब नहरों की इंफर्मे ान बता देंगे। We have nothing to conceal from the hon. Member. लेकिन अगर यह चीज हाउस में आयेगी, पेपर मे आयेगी तो उसका अलटा रिजल्ट भी हो सकता है। अगर वह पब्लिक मे न आयेगा तो भाायद जो वह चाहजते है वह हो जाये।

चौधरी राम लाल वधवाः क्या मिनिस्टर साहब यह बतायेंगे कि इन प्रोजैक्टस से जिलेवार कितना कितना एरिया इरीगेट होता है ?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः स्पीकर साहब, जिलेवार इरीगे ान नही होती और मोर ओवर हमारे सरकल भी जिलेवार नही होते।

चौधरी दलसिंहः मिनिस्टर साहब ने यह फरमाया है कि 1973–74 मे जई कैनाल से 5254 हैक्टेयर्ज एरिया सैराब हुआ। मैं उनसे यह पूछना चाहता हूं कि एक हैक्टेयर या एक एकड़ एरिया पर इरीगे ान का कितना खर्च आता है ?

सरदार हरमोहिन्द्र सिंह चट्ठाः सर, यह सवाल तो इससे पैदा ही नही होता।

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, मै इस बारे मे कुछ निवेदन करना चाहूंगा सरकार का कोइ भी विभाग कमर्ि ायल विभाग नही है। इसमें यह हिसाब नही लगाया जाता कि आमदनी कितनी होनी है और खच्र कितना होना है । सवाल

यह पैदा होता है कि किस एरिया के जमींदारों को कितनी सुविधा पहुंचायी जाये।

चौधरी देवी लालः क्या मैं यह पूछ सकता हूं कि भाखड़ा की टेल पर जो आखिर मे पानी इकट्ठा होता है, ऐसा भी कोई प्रोजैक्ट है कि गांव वाले इकट्ठे होकर हरेक घर से पैसे इकट्ठे करके 15–15 हजार रूपये एस. डी. ओ. को दे और फिर जिधर चाहे उधर वह पानी छोड़ दे? इसके अलावा मै ऐसे चार गांवों का नाम भी ले सकता हूं। मैं उन्हें आई.पी.एम. के नोटिस मे भी लाया हूं।

श्री अध्यक्षः यह सवाल तो मेन क्वै चन से पैदा ही नही होता।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या मिनिस्टर महोदय यह बतायेंगे कि जो प्रोजैक्ट उन्होंने बताये है, उनके भुरू होने के बाद कितना नया एरिया नहर के पानी के नीचे आया है और जो टयूबवैल्ज इन्होंने गिनाये हे कि फलां–फलां नहर पर आगुमैंटे ान टयूबवैल्ज लगाये है, उनकी वजह से कितने रकबे के ऊपर प्रभाव पड़ा है जिसकी वजह से खेती मे कमी हुई है ? मेरे पूछने का भाव यह है कि इधर कितना बढ़ा है और उधर कितना घाटा आगुमैंटे ान टयूबवैल्ज की वजह से हुआ है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, ऐसा है कि हरियाणा में सन् 1968 में जो टोटल एरिया अंडर इरीगे ान था,

32 लाख 23,734 एकड़ और जितने भी प्रोजैक्टस इस अर्से मे कामयाब हुए, उन ससब के बनने के बाद यह एरिया बढ़कर 40 लाख 87,667 एकड़ हो गया । यानी 8 लाख 63,900 एकड़ ज्यादा एरिया को इन प्रोजैक्टस के बनने के बाद पानी दिया गया है। जहां तक कम होने का सवाल है, कही भी टयूबवैल लगने की वजह से किसी एरिया मे कमी नही हुई।

चौधरी चांद रामः मिनिस्टर साहब ने जो यह बताया है कि 8 लाख से कुछ ज्यादा रकबा अंडर इरीगे ान बढ़ा है, क्या उसमे जो प्राइवेट टयूबवैल्ज द्वारा इरीगे ान होती है वह एरिया भी भाामिल है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः इसमे यह सभी भाामिल हैं

चौधरी चांद रामः क्या मिनिस्टर साहब बतायेंगे कि प्राइवेट टयूबवैल्ज का एरिया काटकर गवर्नमैंट की तरफ से जो कोि ा ा हुई है, उससे कितनी सिंचाई हुई है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, अलग अलग फिगर्ज मेरे पास नी है। अगर वे जानना चाहेंगे तो हम इनको ये फिगर्ज दे देंगे।

श्री गिरी ा चन्द्र जो ीः कया मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि 1.11.1966 से लेकर 31.5.1968 तक कोई प्रोजैक्ट रिपोर्ट नही बनी, इसका क्या कारण है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः यह तो ये लोग ही बता सकेंगे, जो उन दिनों पावन मे थे।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि करनाल सर्कल मे कितना रकबा बढ़ा है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अलाहिदा–अलाहिदा डिस्ट्रिक्ट वाइज फिगर्ज तो मेरे पास कही की नही है।

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, प्र न के 'ख' भाग मे पहले ही पूछा गया है कि 'क' भाग मे जो सिंचाई परियोजनाएं पूरी हुई है, उनमे से प्रत्येक परियोजना द्वारा प्रतिवर्श कि कितने एकड़ भूमि सिंचाई के अन्तर्गत लाई गई। क्या मंत्री महोदय यह ब्योरा देने की कृपा करेंगे ?

श्री बनारसी दास गुप्तः यह ब्योरा हमारे पास है और यह प्रौजैक्ट वाइज बयौरा है जो इस प्रकार है–

जुई लिफ्ट इरीगे ान स्कीम

1970–71	**638 एकड़**
1971–72	**6,459 एकड़**
1972–73	**11,108 एकड़**
1973–74	**12,904 एकड़**

1974–75	15,136 एकड़

इंदिरा गांधी लिफ्ट इरीगे ान स्कीम

1970–71	नहीं
1971–72	4,254 एकड़
1972–73	13,279 एकड़
1973–74	20,838 एकड़
1974–75	24,239 एकड़

बीरेन्द्र नारायण चक्रवर्ती लिफ्ट इरीगे ान स्कीम

1972–73	3,482 एकड़
1973–74	11,056 एकड़
1974–75	16,641 एकड़

झज्जर लिफ्ट इरीगे ान स्कीम

1973–74	4,066 एकड़

1974–75	1,197 एकड़

चौधरी दलसिंहः जो फिगर्ज मिनिस्टर साहब ने दी है, उनसे ऐसा जाहिर होता है कि इरीगे ान की तादाद 500 प्रति ात बढ़ी है। क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि कौन से नए प्रौजैक्टस बनाए गए और कहां से पानी लाया गया जिससे कि इतनी इरीगे ान बढ़ी है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय जैसा कि मैंने अर्ज किया कि ये जितने भी नए प्रौजैक्टस बने है, उनमें हमने बहुत सारी चैनल्ज को लाईन किया । जो पानी पहले जमीन के अन्दर जजब होता था उन चैलेल्ज को पक्का करके वह पानी बचाया और काफी तादाद मे डीप टयूबवैल्ज और आगमैंटे ान टयूबवैल्ज लगाए और इन टयूबवैल्ज से डबल्यू. जे. सी. मे पानी डाला और वह तमाम पानी नई बनाई गई नहरो को किदया। जमुना के अन्दर जब बाढ़ आती है तो बाढ़ के दिनों मे बहुत सारा पानी ऐसा होता है जो नहर मे नही डाला जा सकतां हमने इन प्रोजैक्टस को बनाकर बाढ़ के उस पानी को ऐसे इलाकों को दिया जहां कि एक बूंद भी पानी नही मिलता था।

चौधरी पीर चंदः क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि इन प्रोजैक्टस से कितनी पैदावार बढ़ी है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः मैंने आपके सामन जो फिगर्ज दी है वह रकबे की दी है कि इतने रकबे को पानी लग रहा है।

कितने फसल पैदा हुई, इसकी फिगर मेरे पास नही है। ..... (व्यवधान) अध्यक्ष महोदय, मैं सदन को बताना चाहना हूं कि जो टोटल इरीगे ान के रकबे की फिगर मैंने दी है उसमे केवल नहर का पानी और डायरैक्ट टयूबवैल्ज का पानी लगता है, प्राईवेट टयूबवैल्ज इसमे भाामिल नही है।

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, अभी मंत्री महोदय ने बताया है कि हमारे पास सरकिल वाईज इंफरमे ान होती है, डिस्ट्रिक्ट वाईज नही होती है। क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि हिसार सरकिल मे डिस्ट्रिक्ट भिवानी को कितना पानी दिया गया और उससे कितना फायदा हुआ है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः स्पीकर साहब, सरकिल वाई फिगर्ज मेरे पास नही है कि कितना पानी दिया गयां अगर फायदे की बात आप पूछते है तो मैं बता देता हूं कि किस प्रोजैक्ट से किस जिले को फायदा हुआ है? वह इस प्रकार है जूई लिफ्ट इरीगे ान स्कीम से भिवानी जिले को फायदा हुआ है। इंदिरा गांधी लिफ्ट इरीगे ान स्कीम से भी भिवानी को फायदा हुआ हैं बीरेन्द्र नारायण लिफ्ट इरीगे ान स्कीम से हिसार जिले और भिवानी को फायदा हुआ है। झज्जर लिफ्ट इरीगे ान स्कीम से रोहतक जिले की तहसील झज्जर को फायदा हुआ हैं आगमैंटे ान कैनाल से करनाल, कुरूक्षेत्र, सोनीपत, रोहतक जींद, हिसार और भिवानी जिलों को फायदा हुआ है (व्यवधान) और इसी प्रकार आगमैंन्टे ान टयूबवैल्ज लगे है, इन सब का पानी डबल्यू.जे.सी.

कैनाल सिस्टम मे डाला गया है और डबल्यू जे.सी. का जहां–जहां पानी लगता है, उन सभी एरियाज को लाभ हुआ है।

श्रीमती लेखवती जैनः क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि क्या कोइ ऐसी स्कीम भी है, जिससे हमकों भी लाभ पहूंचे ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अम्बाला जिले के नारायणगढ़ मे 200–250 डायरैक्ट इरीगे ान टयूबवैल्ज लगाए है जिनसे काफी एरिया को फायदा पहुंचा है।

चौधरी चांद रामः क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि एक फसल को आप कितनी दफा पानी देते है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय जो मैंने आंकड़े पे ा किये है, इनमें कुछ क्षेत्र तो ऐसे है जिनमे एक फसल को पानी मिलता है और कुछ ऐरियाज ऐसे है जहां सब फसलों को पानी मिलता है। अलग–अलग फिगर्ज मेरे पास नही है।

चौधरी चांद रामः क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि महीने मे एक दिन पानी दिया जाता है या कोइ और हिसाब से दिया जाता है ?

श्री बनारसी दास गुप्तः अध्यक्ष महोदय, टर्न के हिसाब से पानी मिलता है।

चौधरी ि िव राम वर्मा: क्या मंत्री महोदय बताने की कृपा करेंगे कि आगमेन्टे ान टयूबवैल्ज के बारे मे काफी ि ाकायतें आई थी और उनके बारे मे इन्कवायरी भी की गई थी और इस इन्कवायरी कमेटी ने एक रिपोर्ट भी दी थी। उस इन्कवायरी का क्या बना ? इन्कवायरी कमेटी ने जो अपनी रिपोर्ट में सुझाव दिए थे वह वहां तक इम्पलीमेंट हुए ?

Mr. Speaker: Order please. this supplementary question does not arise out of this question.

Tour of Ministers

***1321. Chaqudhri Ram Lal Wadhwa:** Will the Chief Minister be pleased to state—

(a) the names of Ministers, State Ministers including the Chief Minister who remained on tour during the months of January and February, 1975, alongwith the places visited and the T.A. drawn by them, separetely; and

(b) The purpose of the tours as mentioned in part (a) above separately in each case?

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal): the time and labour involved in collecting the information to answer this question will not be commensurate with any possible benefit to be therefrom.

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, ये इलैक ान के महीने थे। हमने सिर्फ दो महीने की इंफरमे ान मांगी है। टाईम एंड लेबर इंवाल्वड होने की क्या बात है ?

Mr. Speaker: Can I compel a Minister to give reply in a particular way?

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, मैं बताना चाहता हूं कि इलैक ान के दौरान किसी ने टी.ए.डी.ए. नहीं लिया। (व्यवधान) स्पीकर साहब, मैं एक चीज क्लीयर कर दूं कि अगर आनरेबल मैंबर यह पूछते कि कौन सा मिनिस्टर कितने दिन गैरहाजिर रहा और कितना टी.ए.डी.ए. लिया तो मैं जवाब दे देता। इन्होंने तो टूर का परपज भी पूछा है। मिनिस्टर का टूर का परपज आफि ियल है। हर बात का क्या जवाब दें.....(व्यवधान)।

चौधरी देवी लाल: आन ए प्वांयट आफ इंफरमे ान, स्पीकर साहब....

Mr. Speaker: No point of information, no point of order during the question hour.

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, दो महीने का पूछा है इसमे कितनी लेबर इन्वाल्वड है। क्या ये चार लाईन नही लिख सकते ?

Mr. Speaker: I cannot compet a Minister to gave reply in a particular way.

श्रीमती चन्द्रावतीः आन ए प्वांयट आफ आर्डर, स्पीकर साहब।

श्री अध्यक्षः बहन जी, क्वै चन अवर है, इसमे प्वायंट आफ आर्डर नही हो सकता।

चौधरी दलसिंहः स्पीकर साहब, चीफ मिनिस्टर साहब के जवाब से ऐसा लगता है कि उनके पास इंफरमे ान है कि महम के हल्के मे कौन सा मिनिस्टश्र गया हुआ था.....(व्यवधान)।

चौधरी बंसी लालः स्पीकर साहब, मेरे पास कोई डिटेल नही है। जैसा कि मैंने पहले कहा है कि अगर आनरेबल मैंबर इस तरह का नोटिस देंगे कि कौन मिनिक्टर कितने दिन बाहर रहा और कितना टी.ए.डी.ए. ड्रा किया, उसका जवाब दिया जाएगा। टूर प्रोग्राम का परपज आफि ायल होता है। इलैक ान मे अगर कोई मिनिस्टर गया है तो उसने कोई टी.ए.डी.ए. नहीं लिया ह।

चौधरी देवी लालः स्पीकर साहब, अगर ये जवाब ही नही देना चाहते तो फिर इतने मिनिस्टर्ज की और इतने डिपार्टमैंटस की जरूरत ही क्या है ? अखिर यह हाउस इसी लिए तो है कि जब इंफर्मे ान मांगी जाए, ये दे। तमाम जगहों पर महम रोड़ी वगैरह मे कैम्पों के कैम्प लगे पड़े थे।

Mr. Speakar: Order please. This is no question.

चौधरी राम लाल वधवा: स्पीकर साहब, हम कोठ परपज वगैरह नहीं पूछते, रोड़ी व महम वगैरह कई जगहों पर कैम्प लगे हुए थे। मिनिस्टर्ज वगैरह वहां पर कितने दिद नहे, जर इतनी लेबर करके हमें बता दे।

चौधरी बंसी लाल: स्पीकर साहब, ये क्वै चन भेज दे, हम जवाब दे दैंगे।

Mr. Speaker: You send another question in that form and the reply will come.

Haryana Lottery Tickets

***1338. Shri K.N. Gulati:** Will the Minsiter for Finance be pleased to state the profit accrued from the sale of Haryana lottery tickets since its inception together with the manner the said amount is being spent?

Finance Minister (Shri Ram Saran Chand Mital):

(b) R. 389.77 Lakhs

(c) For the development activites of the State.

श्री के.एन. गुलाटी: क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि लाटरी सिस्टम से जो इतना मुनाफा हुआ है, वह सारे का सारा पैसा क्यों न फरीदाबाद मे लगा दिया जाए और उस पैसे से कोलेज औरहस्पताल वगैरह खेल दिये जाएं ताकि लोगों को हर तरह की सहूलिय हो जाए।

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, मेरे विचार से तो फरीदाबद मे पहले ही सब से ज्यादा रूपया खर्च हो रहा होगा।

चौधरी दल सिंहः क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि लाटरी वगैरह से जितना मुनाफा हुआ है, वह पैसा कौन–कौन से डिवैल्पमैंट के कामों पर खर्च किय गया है और कितना कितना खर्च किया गया है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, इसका अलग से हिसाब नही हुआ करता। जो मुनाफा हुआ है, वह पूल के अंदर लगा दिया जाता है और जो स्टेट की डिवैल्पमैंट की स्कीम होती है, उस पर खर्च किया जाता है।

चौधरी दल सिंहः स्पीकर साहब, मैंने पूछा है कि वह डिवैल्पमैंट की कौन कौन सी स्कीमें है जिन पर वह पैसा खर्च किया गया है?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, इस बारे मे मैं पहले बता चुका हूं।

चौधरी ि ाव राम वर्माः स्पीकर साहब, क्या मंत्री महोदय बतांयेगें कि जब से हरियाणा मे यह लाटरी का सिस्टम भाुरू हुआ है, उस पर कितना खर्च हुआ है और उससे कितना मुनाफा हुआ है?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, जब से यह ला री सिस्टम चालू हुआ है तक से अब ता कुल आदमी 11 करोड़ 83 लाख 14 हजार रूपये हुई है और उस पर जो खर्चा वगैरह हुआ वह है 7 करोड़ 93 लाख 37 हजार रूपया। 3 करोड़ 89 लाख और 77 हजार रूपये का नैट मुनाफा हुआ है।

चौधरी चांद रामः क्या वजीर साहब बताएंगे कि जो मुनाफा हमे लाटरी से पहले होता रहा है वह अब घट रहा है कि बढ़ रहा है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः पहले से घट रहा है।

श्रीमती चन्द्रावतीः क्या वजीर साहब बताएंगे कि इस लाटरी की टिकटें छपवाने पर कितना खर्चा हुआ और कौन सी प्रैस से उनकी प्रिंटिंग करवाई गई ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः इसके लिये सैपरेट नोटिस चाहिये।

श्री अमर सिंहः क्या मंत्री महोदय यह बालाने का कश्ट करेंगे कि जब से यह लाटरी सिस्टम भ्रारू किया गया है, तब से अब तक लाटरी डिपार्टमैंट पर कि डिपार्टमैंट पर कितना खर्च किया गया है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, हमने पहले सारा खर्च बता दिया है उसमे सब कुछ आ गया । फिर भी मैं

मैंबर साहिबान की जानकारी के लिये बता देता हूं। लाटरी डिपार्टमैंट ने तमाम खर्चा 7 करोड़ 93 लाख 37 हजार रूपये किया है।

चौधरी दल सिंहः क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि आज तक लाटरी के कितने ड्रा निकल चुके है और हरियाणा प्रान्त मे कितने ऐसे आदमी है जिनको फस्ट प्राईज मिल चुके है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, इसका उत्तर पहले भी दिया जा चुका है। फिर भी आनरेबल मैंबर साहिबान की जानकारी के लिये बता देता हूं। पहला 1968 मे दूसरा 1969 मे, इसके साथ एक एम्बैसेडर कार भी थी।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि लाटरी से सालवार कितना कितना लाभ होता रहा है ?

1968–69 मे 58 लाख 67 हजार

1969–70 मे 1 करोड़ 39 लाख 15 हजार

1970–71 मे 1 करोड़ 4 लाख 28 हजार

1971–72 मे 20 लाख 98 हजार

1972–73 मे 27 लाख 77 हजार

1973–74 मे 23 लाख 63 हजार

1974–75 मे 15 लाख 29 हजार

चौधरी राम लाल वधवाः मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि जो ड्रा निकलते रहे है उन मे बम्पर प्राइज लाख सवा लाख के है और कुछ दूसरे भी है, क्या सरकार को बम्पर्ज मे फायदा हुआ है या कि सभी मे फायदा हुआ है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः स्पीकर साहब, अभी इस बारे मे पूरी डिटेल मेरे पास नही है। आनरेबल मैंबर अलग से नोटिस दे तो हम बता देंगे।

चौधरी चांद रामः स्पीकर साहब, हर साल लाटरी से यह आमदनी घटती ही चली गई है और लोगों की लुटाई अभी तक जारी है। क्या मंत्री महोदय इस बात को ध्यान मे रखते हुए कि सरकार की आमदनी घटती जा रही है, इस लाटरी सिस्टम को बन्द करने की कोि ाश करेगे ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः जनाब, अभी यह घाटे का सौदा नही हैं मुनाफा है, पर है कम।

चौधरी ि ाव राम वर्माः स्पीकर साहब, लगातार तीन–चार साल से लाटरी से आमदनी बढ़ने की बजाये करोड़ो से घट कर 15,20,25 लाख आ गई है, क्या मंत्री महोदय बताएंगे कि इसके क्या कारण है? क्या इसके बढ़ने की भी कोई आ ाा है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः मुनाफा इस लिये कम होता जाता है कि एक तो कई राज्यों में इनकी सेल पर बैग लगा दिया गया है और यहां के टिकट वहां पर नहीं बिकते है इससे आमदनी काफी घटी है क्योकि हरियाणा मे इतनी सेल नही है जितनी कि दूसरे राज्यों मे हैं हमारे टिकटस की 90 फीसदी सेल दूसरे राज्यों मे होती हैं दूसरे सैन्ट्रल गवर्नमैंट ने इस आमदनी पर इनकम टैक्स लगा दिया है जोकि काफी लगता हैं तीसरे इन्टर स्टेट कम्पीटी ान बहुत ज्यादा हो गया है और सारी स्टेटस ने ये टिकटस जारी कर दिये है जिससे आमदनी पर बहुत असर पड़ा है और फिर कुछ लोगों मे जो ा भी कम हो गया और आप लोगों की कृपा से भी लोगों मे जो ा कम हुआ है।

चौधरी फूल चंद (रोहट): कई बार हम देखते है कि एक रूपये का टिकट आठ आने मे फैंकने की कोि ा ा करते है और हमें भाक होने लगता है कि कहीं वे टिकट बोगस तो नही है। क्या वजीर साहब बतायेंगे कि क्या उनके नोटिस मे बोगस टिकटों की सेला आई है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः हमारी तरफ से तो कोइ बोगस सेल नही होती है।

श्री जगजीत सिंह टिक्काः वजीर साहब ने फरमाया है कि कई दूसरे राज्यों ने हमारे टिकटों की सेल पर पाबंदी लगा दी

है तो क्या उन के टिकटों पर भी हमारे राज्य मे भी पाबंदी लगाई गई है ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः नही, हमने नही लगाई है। हम तो यह कोि ा ा कर रहे है कि वहां पर भी यह पांबदी हटा दी जाये। पिछली दफा आल इंडिया डायरैक्टर्ज आफ लाटरीज की काफ्रेंस हुई थी और उस मे यह बात उठाई गई थी कि जहां पर जिन स्टेटस मे यह पाबन्दी लगी है, उसे हटा दिया जाये।

चौधरी राम लाल वधवाः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि अगर दूसरी स्टेटस यह बैन नही हटाती है तो क्या अपनी सरकार विचार करेगी कि वहां टिकटों की सेल पर यहां पर बैन लगाया जाये ?

श्री राम सरन चन्द मित्तलः यह तो हाइपोथैटीकल क्वै चन हैं जैसे जैसे जरूरत होगी मौका के मुताबिक वैसे किया जायेगा।

Buses with Haryana Roadways

***1344. Chaudhri Shiv Ram Verma:** Will the Minister for Development be pleased to state—

(a) the total number of buses with the Haryana Roadways as on 31-3-1975;

(b) the number of buses out of those memtioned in part (a) above which are plying in good contition; and

(c) the number of buses with the karnal Depot ?

ि ाक्षा एवं परिवहन राज्य मंत्री (श्रीमती प्रसन्नी देवी):

(क) 1602

(ख) 1559

(ग) 158

चौधरी ि िव राम वर्मा: क्या वजीर साहिबा बतायेंगी कि पिछले साल कितनी बसें किसी न किसी नुक्स के कारण रास्ते मे खड़ी रही ?

श्रीमती प्रसन्नी देवी: अगर आप ब्रेक डाउन्ज की फिगर्ज लेना चाहते है तो इसके लिये सैप्रेट नोटिस दे, पता करके बता देगे।

चौधरी दलसिंह: क्या वजीर साहिबा बतायेंगी कि हरियाणा मे मुसाफरों की सहूलियत को ध्यान मे रखते हुये कितने और बसों की जरूरत है और उस जरूरत को सरकार कब तक पूरा करना चाहती है ?

परिवहन मंत्री (कर्नल महा सिंह): जैसा कि अभी बताया गया है 31 मार्च, 1975 को हमारे पास 1602 बसें थी और 120 बसें बाडी बिल्डिंग के लिये गई हुई है। हमारी तजवीज यह है कि इस पांच साला प्लान के आखिर तक 3500 बसे हरियाणा मे कर दे लेकिन इसमे कइ किस्म की दिक्कते है। कभी तो बसों के लिये

चैसीज नही मिलती और कभी फंडज की दिक्कत पे ा आती है। बैंकों से हमें लोन भी नही मिल पाता है।

Chaudhri Mehar Chand: May I know from the Transport Minster what arrangements have been made to provide transport facilities to the people whose Tahsils have recently been changed.

कर्नल महा सिंहः इस बारे मे अगर मैंबर साहिबान की तरफ से कोई सुझाव आयेंगे तो उन पर ध्यानपूर्वक विचार किया जायेगा।

श्रीमती चन्द्रावतीः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि रोजाना कितने यात्री बसों मे सफर करते है और क्या उन सब के लिये जो मौजूदा बसें है, वे काफी है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः इसके लिये सैप्रेट नोटिस दें।

कर्नल महा सिंहः इस बारे मे मैं अर्ज करता हूं कि एवरेज डेली चार लाख से ज्यादा लोग आजकल बसों मे सफर करते है और उनके लिये किसी हद तक यह बसें काफी है क्योंकि देख जाता है कि कई बार बसें खाली भी चलती है और कभी–कभी ओवर लोड भी चलती है।

चौधरी मनफूल सिंहः क्या वजीर साहब बतायेगें कि बसों मे ओवर लोडिंग बहुत ज्यादा है और इसके पे ोनजर इस ओवर लोडिंग के बारे मे कोई परसैंटेज फिक्स करेंगे ?

कर्नल महा सिंहः ओवर लोडिंग को रोकने की काफी कोि ा ा की गई है लेकिन ला एंड आर्डर की समस्या बन जाती है क्योकि कंडक्टर्ज ड्राइवर्ज को पैसैंजर मजबूर कर देते है कि उनको बिठाया जाये और कई दफा इस बात को लेकर उनमे झगड़ा भी हो जाता है और वे उनकी पिटाई भी कर देते है। मैं मैंबर साहिबान से कहूंगा कि वे पब्लिक को समझायें कि जब बस ओवर लोड हो तो वे उसके अन्दर न बैठे।

श्री अमर सिंहः वजीर साहब ने बसों की तादाद 31 मार्च, 1975 को 1602 बताई है तो क्या वह बतायेंगे कि इनकी जिलावर ऐलोके ान किस तरह से ह ?

कर्नल महा सिंहः हमारी ऐलोके ान जिलावार नही होता डिपोवाइज होती है और वह स प्रकार है :

अम्बाला	:	199
गुड़गांव	:	183
चंडीगढ़	:	144
रोहतक	:	223
करनाल	:	158
हिसार	:	205
रिवाड़ी	:	128

जींद : 118

भिवानी : 107

कैथल : 137

चौधरी चांद रामः क्या वजीर साहब बतायेंगे कि क्या उनके पास ऐसी ि ाकायते आई है कि जो बाडीज बनायी जाती है उन में डिफैक्टिव सामान लगाया जाता है और टायर वगैरा बदले जाते है? क्या इस बारे मे कोई चैकिंग वगैरा की गई है और क्या अपने तौर पर ही कोई सैम्पल चैकिंग की गई है ?

कर्नल महा सिंहः जब भी कभी ऐसी ि ाकायतें आती है तो उन पर महकमा के अफसर फौरी तौर पर ऐक ान लेते है।

चौधरी राम लाल वधवाः क्या वजीर साहिबा बतायेंगी कि बसों की कमी की वजह से हरियाणा मे ऐवरेज डेली कितने ट्रिप मिस होते है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः प्रोग्राम के मुताबिक जैसा कि बना है, कोइ मिस नही होता हैं

चौधरी राम लाल वधवाः क्या कहा, कोई भी मिस नहीं होता ? चार ट्रिप तो करनाल मे डेली मिस होते है।

श्री के.एन. गुलाटीः वजीर साहिबा बतायेंगी कि पिछली दफा जो फरीदाबाद के लिये बसें देने का वायदा किया था, क्या वह बसें वहां के लिये दे दी गई है या नही ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः गुड़गांव डिपों के लियें कुछ बसें दे दी गई है और कुछ बसें वहां के लिये बन रही है और तेयार होकर मिल जायेंगी। कुछ बसें सिटीज के लिये डी.टी.यू. टाईप की बन रही है उन मे से ज्यादा बसे फरीदाबाद के लिये दी जायेंगी।

चौधरी प्रताप सिंह दौलताः क्या कोई ऐसी तजवीज हे कि जिला हैडक्वार्टज की डीलक्स बसों से जोड़ा जाये और क्या यह सही है कि महकमा की तरु से इस तजवीज की मुखलिफत इसलिये है कि इन मे एम.एल.एज. मुफ्त कफर करेंगे ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः ऐसी कोई बात नही। डीलक्स बसें महंगी पड़ती है और उन मे बैठने वाली सवारियां इतनी ज्यादा नही होती कि वह चलाई जा सके इस लिये वे घाटे मे चलती है।

चौधरी ि ाव राम वर्माः क्या वजीर साहिबा बतायेंगी कि इन्द्री के हल्का मे कितनी कितनी डीलक्स बसें चक्कर लगाती है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः इन्द्री के हल्का की आप चिन्ता न करो।

चौधरी ि ाव राम वर्माः चिन्ता क्यां न करूं ? मेरा गांव उस मे है ..... (हंसी).....।

श्रीमती प्रसन्नी देवीः आप सड़क पर बैठ कर गिन लिया करो.....(हंसी)....।

चौधरी दलसिंहः मिनिस्टर साहब के जवाब से जाहिर होता है कि 43 बसें ऐसी है जो नकारा है और ठीक हालत मे नहीं चल रही। मैं पूछना चाहता हूं कि जींद डिपों मे कितनी ऐसी बसें है जो नाकाना है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः जींद की नही, हिसार और रोहतक डिपों की बसें नाकारा है। हम सब जगह कोि ा ा करत`है। कि बसों के पुर्जे मिल सके, लेकिन कोि ाश करने बावजूद भी नही मिलते और यही कारण है कि हम ये बसे नही चला पाये है। लेकिन जींद डिपों की बसें नाकारा नही है।

चौधरी रामजी लाल डागरः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि पलवल डिपों के लिए कितनी नई बसों की मांग है ?

कर्नल महासिंहः कोई मांग नही है। हम खुद देखते है कि जहां पैसैंजर ज्यादा हो वहां जनरल मैनेजर सब के लिए इंतजाम कर देते है।

श्रीमती चन्द्रावतीः मिनिस्टर साहिबा ने कहा कि टाईम मिस नही होते, लेकिन मैं कहती हूं कि टाईम मिस होते है। क्या मिनिस्टर साहिबा इन्क्वायरी करवायेंगे ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः अगर आप नोटिस मे लाएंगे तो इन्क्वायरी की जाएगी और गौर किया जाएगा।

श्री गौरी भांकरः क्या मिनिस्टर साहब बतायेंगे कि स्टेट मे बसों की जो कमी है, उसको कब तक पूरा कर दिया जाएगा ?

कर्नल महासिंहः अध्यक्ष महोदय, हम जल्दी से जल्दी इस कमी को पूरा करना चाहते है। कमी इस वजह से है कि हमे फाईनैंि ायल डिफिकल्टी है। मैं कह चुका हूं कि हम 3500 बसें लेना चाहते है लेकिन मैनुफैक्चरर्ज से बसें नही मिलती क्योंकि फाईनैंि ायल डिफिकल्टी है और बैंकों से लोन नही मिलता। अगर आप दूसरी स्टेटों को देखे तो मालूम होगा कि हरियाणा ने बैंकों से ज्यादा लोन लेकर 248 चैसीज ली है और भाायद इतनी किसी स्टेट ने नही ली होगी।

लाला रूलिया रामः स्पीकर साहब, चण्डीगढ़ से इंदरी जैसी छोटी जगह के लिए बसें बहुत चलती है लेकिन घरौडा जैसी बड़ी जगहों के लिए बसें क्यों नही चलतीं ? क्या मिनिस्टर साहब बतायेंगे कि इसका क्या कारण है ?

श्रीमती प्रसन्नी देवीः इस सवाल से तो सप्लीमैंटरी अराईज नही होता।

चौधरी राम लाल वधवाः अध्यक्ष महोदय, मिनिस्टर साहब ने करनाल मे टोटल बसें 158 बताई है। क्या मंत्री महोदय

बतायेंगे कि 1975–76 मे करनाल डिपों ने कितनी बसों की मांग की है और सरकार का कितनी बसें देने का विचार है ?

कर्नल महासिंहः किस डिपों ने कितनी मांग की है, इसके आंकड़े इस वक्त अवेलेबल नही है, इसके लिए सैप्रेट नोटिस देंगे तो बता दिया जाएगा।

चौधरी पीर चंदः क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि जींद, सोनीपत और रोहतक मे जो बसें बनती है, उन पर प्रति गाड़ी कितनी लागत आती है और जो जालन्धर मे बनती थी, उन पर कितनी लागत आती थी ?

कर्नल महासिंहः जालन्धर मे बसों की कोई बाडी नही बनवाई जाती । जब कम्पोजिट पंजाब मे बाडीज बनती थी तब जालन्धर मे बनती थी, लेकिन अब नही।

चौधरी पीर चंदः हम तो खर्चा पूछ रहे है कि कितना खर्चा आता था ?

श्री ओम प्रका ा गर्गः स्पीकर साहब, मेरे एक दोस्त ने सवाल पूछा था जिसमे कहा था कि ''इन्द्री'' छोटी जगह है। क्या मंत्री महोदय बतायेंगे कि 'इन्द्री' बहुत बड़ी जगह नहीं बन सकती ? (हंसी)

कर्नल महा सिंहः अगर हरियाणा की कोई जगह छोटी हो और उसको बड़ी बना दिया जाए तो हम सब को खु ाी होनी चाहिए।

चौधरी ि ाव राम वर्माः स्पीकर साहब कुछ बसें ऐसी है जो बड़ी मु ि कल से अपने डैस्टीने ान पर पहुंच पाती है। उन का ढांचा हिला होता है। एक बस का नम्बर बता सकता हूं जिस मे मैंने 21 अप्रैल, 1975 को सफर किया है। बस नं. 3917, रूट नं. 36 है जिसकी सारी वैल्डिंग उखड़ी पड़ी है। सारा ढांचा हिला हुआ है और यह बस कुरूक्षेत्र पहैवा से होती हुई करनाल पहुंचती है। इसके अतिरिक्त जो नई बसें स्टील बाडी की आई है, उनकी सीटें इतनी तंग है कि आदमी सीधा होकर नही बैठ सकता। अगर एक–एक सीट निकलवा कर सारी सीटों को ठीक किया जाए तो बैठने लायक हो सकती है।

कर्नल महा सिंहः ऐसी ि ाकायते हे जिन पर अमल किया जा रहा है और सीटें कम की जा रही है। आपकी तरफ से जो तजवीज आती है उसके मुताबिक बसें दुरूस्त करते है।

चौधरी राम लाल वधवाः मंत्री महोदय ने 1602 की जो फिगर बताई है इस मे माडल 1973, 1974, 1975 की कितनी बसें है और 1973 से पहले के माडल की कितनी बसें है ? मेरे कहने का मतलब यह है कि 1602 की जो फिगर बताई है, उस में माडलवाईज पोजी ान क्या है ?

कर्नल महा सिंहः मोडलवाईज डिटेल इस प्रकार है–

Less than one year -- 165

More than one year but less than two years -- 287

More than two years but less than three years -- 229

More than three years but less than four years -- 241

More than four years but less than five years -- 327

नियम 45 के अधीन सदन के पटल पर रखे गए तारांकित प्र न का लिखित उत्तर (1) 23

More than five years but less than six years -- 183

More than six years but less than seven years -- 109

More than seven years but less than eight years -- 57

More than eight -- 4

चौधरी फूल चंद (रोहट): स्पीकर साहब, कुछ बसें बिल्कुल खटैहड़ा हो गई है। जब चलती है तो ऐसा लगता है कि

रोड़ी कूटने वाले इंजन पर बैठे है। मै पूछना चाहता हूं कि आज कल कुछ बसें कंडम भी की है या नही ?

कर्नल महा सिंहः 1974–75 के अन्दर हमारा अन्दाजा था कि 126 बसें कंडम करनी पड़ेगी लेकिन नही कर सके क्योंकि इनके अगेन्स्ट बसें कम मिली है। हमने 131 बसें रिप्लेस की है।

चौधरी ि ाव राम वर्माः स्पीकर साहब, मैंने पहले भी बात की थी लेकिन उसका असर कोई नहीं हुआ। बात यह की थी कि सड़कों के किनारे सवारियां खड़ी रहती है लेकिन बस नही रोकते क्योंकि बसों मे जगह नही होती। मेरा एक सुझाव है कि सरकार इस बारे मे ऐसा प्रबंध करें कि बसें एक–एक, दो–दो करके सवारियां उठाती रहे ताकि भीड़ न रहे। सरकार सब को हिदायत कर दे कि हर एक बस एक–एक सवारी लेती रहे।

कर्नल महा सिंहः यह हिदायत एक दफा नही, बार बार जारी की गई है। अब हम फ्लांइग स्क्वेड भेज रहे है। मैं मैंबर साहबान से विनती करूंगा कि अगर उनके नोटिस मे किसी किस्म की बात आए तो एस.टी.सी. साहब के नोटिस मे लाएं।

Mr. Speaker: The Question is over.

नियम 45 के अधीन सदन के मेज पर रखे गए तारांकित

प्र न का लिखित उत्तर

Loans Advanced by the Haryana Harijan Kalvan Nigam

***133. Chaudhri Mehar Chand:** Will the Minister for Social Welfare be pleased to state the district wise total amount of loans advanced by the Haryana Harijan Kalyan Nigam to Harijans during the period from 1-11-1966 to 31-3-1975?

समाज कल्याण मंत्री (चौधरी भजन लाल): एक ब्यौरा सभा पटल पर रखा जाता है।

Statement showing the yearwise actual District wise disbursement of loans by the Haryana Harijan Kalyan Nigam Limited from its inception i.e. 2-1-1971 to 31-3-1975

Sr. No.	Distict	1971-72	1972-73	1973-74	1974-75	Total
1	Ambala	50,00	54,500	1,10,000	1,64,750	3,97,250
2	Karnal	4,34,600	1,84,250	1,13,000	2,38,750	9,70,600
3	Hissar	10,74,400	2,25,900	1,51,750	2,20,375	16,72,425
4	Mohindergarh	21,000	16,500	82,500	1,60,000	2,80,000
5	Gurgaon	1,98,600	26,900	1,02,000	1,85,000	5,12,500
6	Rohtak	2,69,800	53,300	70,500	1,33,750	5,27,350
7	Jind	65,500	11,100	66,340	1,21,500	2,64,440
8	Bhiwani	--	--	1,00,450	1,.3,390	2,03,840

9	Sonepat	--	--	1,19,750	97,500	2,17,250
10	Kurukshetra	--	--	1,02,880	1,42,500	2,45,380
	Total	21,13,900	5,72,450	10,19,170	15,67,515	52,73,035

भाोक प्रस्ताव

मुख्य मंत्री (चौधरी बंसी लाल): स्पीकर साहब, हमारे पिछले सदन की बैठक के उठ जाने के बाद और आज के मिलने से पहले हमारे कई साथी हमारे से बिछुड़ गएं तो मैं उनके लिए औबिचुअरी रैफरेन्स लाना चाहता हूं।

This House places on record its deep sense of sorrow on the sad demise of Dr. Sarvepalli Radhakrishanan, on 17th April, 1975.

Born on September 5, 1888 at Tiruttani, Dr. Radhakrishnan had his early educaiton at Vellore and Madras. After receiving an M.A. degree in Philosophy from the Madras Christian College in 1909, He joined the Madras Educaitonal Service as a lecturer and rose to Professorship in 1917. He gained international fame in 1926 when he was invited to deliver lectures at Oxford. He also delivered Hoskell lectures at the Chicago University, U.S.A.

He was appointed Vice-Chancellor of the Banaras Hindu University in 1939. In May 1944, he was invited by the Chinese Government to deliver a series of lectures in China. In 1946, he was invited to the United States to lecture at fourteen Universities unde the auspices of the Watumall fundaton.

Dr. Radhakrishnan headed the Indian delegation to UNESCO from 1946 to 1952 and presided over UNESCO'S General Conferences in 1952-54.

In January 1948, Dr. Radhakrishnan gave up the Vice-Chancellorship of the Banaras Hindu University to take up Chairmanship of the Universities Commission.

In 1949, Dr. Radhakrishnan was decorated with the highest award of honour, 'Bharat Ratna'. He was elected as President in 1962. He made many goodwill visits to the countries of the world as President, thereby strengthening the bonds of friendship and amity with other nations.

In 1964, His Holiness the Pope Paul VI honoured him with the highest Vatican award, the 'Golden Spur'. His last work 'Religion in a Changing World' was published in 1968. He received "the Templeton Award" in March, 1975. His birthday on the 5th September is celebrated thought India as "Teachers Day".

In his death the country has lost a philosopher, statesman, scholar, humanist and an idealist. The House resolves to send its heart-felt condolences to the members of the bereaved family,

This House places on ecord its deep sense of sorrow on the sad demise of Sh. Khandubhai K. Desai, formar Governor of Andhra Pradesh on 17th April, 1975.

Shri Desai who took his school educaiton in Balsar and College education at Bombay was born on October, 23 1898. He graduated from the Gujarat Vidyapith in Ahmedabad and served as a teacher for some time. He took the trade union work in Ahmedabad. He was jailed for a year in 1932-33. In 1937 he was elected to the Bombay Legislative Assembly. In the 1942 'Quit India' movement, Sh. Desai was

imprisoned. He was elected to the Constituent Assembly in 1946 and was an active member of the Parliament.

In 1954, he was appinted as the Union Labour Minister. He remained member of the Rajya Sabha and resigned its membership on being appointed as Governor of Andhra Pradesh.

In his death the country has lost one of the architects of the trade union movement in India. The House resolves to send its heart felt condolences to the members of the bereaved family.

This House places on record its great sense of sorrow on the sad demise of Miss Padmaja Naidu, former West Bengal Governor on 2nd May, 1975.

Daughter of an illustrious mother, Smt. Sarojini Naidu, Miss Padmaja Naidu was born on November 17,1900 in Hyderabad. She studied at home. In 1929, she founded the Plague Relief Association in Hyderabad. For sometime she was connected with the Senate of the Osmania University. She was jailed fro taking part in the “Quit India” movement in 1942.

She was elected to the Parliament in 1950 but resigned her seat two year later because of ill healthe. She was appointed Governor of West Begal in 1956 and was given extension after the completion of the term.

After laying down her office as Governor, Miss Naidu was Chairman of the Executive Council of the Nehru Memorial museum and Library Society. She was also Vice-Chairman of the Jawahar Lal Nehru Memorial Fund.

She was awarded Padma Vibhushn in 1962.

In her death the country has lost an ardent patriot and a front rank constructive worker. The House resolves to send its heart frlt condolences to the members of the breaved family.

This House places on record its deep sense of sorrow on the sad demise of Sh. Rajendra Narayan Singh Deo, former Chief Minister of Orissa on 23rd February, 1975.

Sh. Rajendra Narayan Singh Deo was born on the 31st March, 1912 at Saraikella in Orissa. He was the sone of Maharaja Aditya Pratap Singh Deo. He was invested with ruling powers in 1933.

He was the first ruler to sign a merger agreement with the Indian Union. He founded Ganatantra Parishad in 1950. He was elected to the Lok Sabha in 1952, and later to the State Assembly in 1957. He was the leader of the opposition in Assembly during 1957-59. He was deputy leader and Finance Minister in Congress Gantantra Parishad coalition Government during 1961 to 1967. He was Chief Minister from 1959-61 and was Minister for Political and Services and Industies from 1967 to 1971.

This House resolved to send its heart-felt condolences to the members of the bereaved family.

The House places on record its deep sense of sorrow on the sad demise of Sh. Partap Singh M.P. on the 24th January, 1975.

Sh. Pratap Singh was born on the 27th December, 1912. He joined the Army in 1932 and earned decorations for meritorious services. He retired from the Army in 1950. He was a member of the Himachal Pradesh Legislative Assembly during 1952-56 and whip of the Congress Party. He was a member of the Lok Sabha from 1962-67 and again 1967-70. He was re-elected to the Lok Sabha in 1971.

The House resolves to send its heart-felt condolences to the members of the bereaved family.

This House places on record its deep sense of sorrow on the sad demise of Sh. Dabendra Nath Mahato, M.P. West Bengal on the 17th February, 1975.

Sh. Dabendra Nath Mahato was born on the 1st March, 1918. He graduated from Culcutta University. He was a member of the Bihar Legislative Addembly from 1950 to 1956. Parliamentary Secretary to the Chief Minster of Bihar from 1952 to 1956 and a member of the West Bengal Legislative Assembly from 1956 to 1966 and again from 1969-70. He was the Prisident of the Congress Committees of Distric tManbhum and Purulia, General Secretary of District Congress Committee Purulia and a member of the A.I.C.C. He worked actively for the cause of education and up-lift of the Scheduled Castes and Backward Classes. He was also editor of the fortnightly 'Jana Ahwan'

The House resolves to send its heart felf condolences to the members of the bereaved family.

This House places on record its deep sense of sorro on the sad demise of Principapal Rala Ram, former M.L.A. of Punjab on the 21st jannary. 1975.

Sh. Rala Ram was born on January 5, 1900. He was educated at hoshiarpur, Lahore and Jammu. He stated his career as a teacher in 1921. He visited east and South Africa in 1931-32. He remained a fellow of the University for a number of years and was a member of the Syndicate twice. He was elected to the Punjab Legislative Assambly in 1952 and continued till 1967. He was the Chairman of the Punjabi Regional Committee in the composiste Punjab.

The House resolves to send its heart-felf condolences to the members of the bereaved family.

Sir Khizar Hayat Tiwana, former Premier of eastwhile per partitioned Punjab

This House resolves so send its hear-felt condolences to the members of the bereaved family.

चौधरी चांद राम (बबैन अनुसूचित जाति): माननीय स्पीकर साहब, जो भाोक प्रस्ताव मुख्य मंत्री जी ने उन महानुभावों के बारे मे जो आज हमारे बीच मे नही है और जिनकी मौत से बड़ी भारी खला हुई है, सदन मे रखा है और विचार प्रकट किए है, मैं उनसे अपने आप को संबन्धित करता हूं। डाक्टर राधाकृश्णन की मौत के बारे मे बहुत कुछ लिख गया । मुख्य बात जो उनके बारे मे लिखी गई, वह यह थी कि स्टालिन भी उनसे बातचीत करने मे इज्जत महसूस करते थे। मै यह समझता हूं कि

भारत के लिए यह एक बहुत बड़ी चीज है जो यहां के एक विद्वान के बारे मे कही गई है। एि ाया इतना बड़ा दे ा है उसका डिक्टेटर कहिए, प्राईम मिनिस्टर कहिए या सर्व सर्वा कहिए अगर वह हमारे एक विद्वान के साथ बातचीत करने मे इज्जत महसूस करते थे और वह भी उस जमाने मे जब हमारा दे ा आगे को बढ़ रहा था तो यह बहुत बड़ी चीज है। तो मैं समझता हूं कि उनके चले जाने से भारत को बहुत भारी नुक्सान हुआ है। श्री खण्डू भाई देसाई लेबर लीडर थे। वे मजदूरों मे काम करते थे। हमारा उनसे कई वार वास्ता पड़ा परन्तु मौत संसार मे किसी भी व्यक्ति को बख्भाती नही है। वे आज हमारे बीच मे नही है। उनके गुजर जाने से हमे बहुत बड़ा दु:ख हुआ है। श्री आर.एन. सिंह देव हमारे भारतीय लोक दल के लीडर थे। उनकी मृत्यु होने से पहले, वे पिछले दिनों दल की मीटिंगज मे भाामिल होते थे। तो हमकों ऐसा लगता था कि एक राज घराने मे पैदा हो कर भी साधारण जीवन बसर करते है। वे साधारण तौर पर सोचते थे, साधारण तौर पर व्यवहार करते थे। हमे ऐसा लगता है कि आजाद हिन्दुस्तान के बाद राजा लोग किस तरह से बदल गये। यह हमको आर.एन. सिंह देव के जीवन से सबक मिलता है।

श्री प्रताप सिंह संसद सदस्य जो हिमाचल के थे। उनसे मेरा बड़ा घनिश्ट संबंध थां उनसे कई बार मुलाकात होती रही। मैं समझता हूं, वे जिस तरह से पहाड़ी क्षेत्र मे, आदिवासी हरिजनों मे इतना काम करते थे, आज भी उनका काम याद आता है।

श्री देवेनद्र नाथ महातों की मौत से भी वाकई ही बड़ा भारी नुक्सान हुआ है। जैसा कि चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा है, वे एक गरीब परिवार मे पैदा होकर गरीबों मे काम करते थे। उनको भी मैं अपनी ओर से श्रद्धांजलि भेंट करता हूं। सर खिजर हैयात खां टिवाना हमारे ज्वांयट पंजाब मे जब हम सन् 1946–47 मे लाहौर मे पढ़ते थे, वे उस वक्त मुख्यमंत्री हुआ करते थे। वे रोहतक मे भी जाट स्कूल मे कई बार जल्से और जलूसों के मौके पर देखे। वे हमे ाा हिन्दु मुस्लिम यूनिटी के ह कमे रहे। वे हिन्दू सिक्ख मुस्लिम इतिहाद को चाहते थे। अखिरी वक्त तक इसी वि वास के साथ डटे रहे। कई आदमी बड़े फिरकापरस्त होते है लेकिन मैं समझता हूं कि जो मिसाल टिवाना साहब ने हमारे सामन और संसार के सामने रखी वह काबले तारीफ है। पाकिस्तान अलग हो गया, हिन्दुस्तान अलग हो गया लेकिन उनका वि वास अडिग रहा, वे यही चाहते थे कि हिन्दु मुस्लिम इकट्ठे रहे। मजहब की बिना पर वे दे ा का बंटवारा नही चाहते थे। मैं समझता हूं ऐसे इंसान का हमारे बीच से चले जाने से दे ा को बड़ा भारी नुक्सान हुआ है।

प्रिंसिपल रला राम मेरे साथ सन् 1952 मे एम.एल.ए. बने थे। पंजाब यूनिवर्सिटी के सीनेट के काफी दिनों तक मैंबर रहे। स्पीकर साहब, प्रिंसिपल रला राम जी संत विधायक थे। लोगों के साथ साधुवाद का व्यवहार करते थे। जिन हालात मे उनकी दु:खदायी मौत हई, जिन हालात मे उनका अन्त हुआ मै

समझता हूं उनके सारे जीवन के मुकाबले मे बहुत ही ज्यादा दुःखदायी नजर आता है।

पदमजा नायडू सारी उम्र दे ा की सेवा करती रही। उनकी माता, जिनकी हम को अंग्रेजी पोयटरी पढ़ने का बहुत ज्यादा मौका मिला ओर वे ऐसे वक्त मे आजादी की लड़ाई मे ऐसे काम कर गई जो मैं समझता हूं नारी जाति के लिए बहुत बड़ी मिसाल है। यह साल तो सारी दूनियां मे नारियों का साल हैं जितनी महान उनकी माता थी, उससे महान वे खुद भी थी। ऐसे साल मे उनका चले जाना दे ा के लिए बड़ी भारी दुःखदायी बात है। मै समझता हूं कि यह प्रस्ताव जो पे ा किया है, उससे मै अपने आपको संबंध करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को भाान्ति प्रदान करें ओर उनके लवाहकिन को पूरा हौसला दे कि इस गम को बरदा त कर सके।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी): स्पीकर साहब, जिन बुजुर्गो और साथियों के चले जाने पर जो प्रस्ताव लीडर आफ दी हाउस ने रखा है, मै अपने जजबात उसके साथ वाबस्ता करता हूं। सर डाक्टर राधाकृश्णन जी के बारे मे इतना ही अर्ज करना चाहता हूं कि उनको मास्टर आफ ईस्ट्रन विजडम, तो वाजिब होगा। पिछले चार–सौ, पांच–सौ साल मे योरूप मे या ईस्ट मे, योरूपीयन मुल्कों ने जो आध्यात्मिक तरक्की की, हिन्दुस्तान मे चूंकि फुर्सत भी और गंगा और जमुना के मैदान मे फिलौसफी डिवैल्प हुई, यह फिलौसफी सर राधाकृश्णन जी के वजूद मे आने

से पहले हिन्दुस्तान मे ही रही। वे हिन्दुस्तान के एक कलचरल अम्बैसेडर थे। उन्होने जो किताबें लिखी, जिन लोगों ने नावल भी पढ़े है, अमेरिका मे या रूस मे, जेसे मालियतपरस्त मुल्कों मे लिखे गये, उन नावलों मे भी दुबारा जन्म लेने की बात,यह जो theology, Indian theology जो दूनियां के लिटरेचर मे दाखिल हुई, उसका तमाम क्रेडिट राधाकृश्णन जी को जाता है। वे कई यूनिवर्सिटीज के स्टैंडिंग प्रोफैसर थे। वे वहां जाया करते थे और सालाना लैक्चर डिलिवर किया करते थे। इसके अलावा गवर्नमैंट इन्हे इन्वाइट भी करती थी। तो हिन्दुस्तान की जो रूहानियत की फिलौसफी थी, जो हमारा खजाना था तीन चार हजार साल से, वह उनके वजूद मे आने के बाद दूसरी दूनियां को पता लगा। चुनांचे मुझे अब तक याद है जब उनको अम्बैसेडर बना कर रूस मे भेजा गया तो कई अखबारों ने इसे in congruous का एडिटोरियल लिखा कि अजीब बात है कि स्पिरचूअल टीचर को dialectical materialism के मुल्क रूप मे भेज दिया, ये कैसे कामयाब होंगे वहां ? बाद मे के.पी.एस.मैनन ने जो किताब लिखी, जैसा कि अभी भाई चान्द राम जी ने जिक्र किया कि उन्होने लिखा कि मेरी स्टालिन से जब मुलाकात हुई तो स्टालिन ने बजाया कि इससे बड़ा डिप्लोमैंट आदमी, जितने उस वक्त तक के कन टैम्परेरी है, और आज तक है, जो हिन्दुस्तान के अम्बैसेडर रहे, सर राधाकृश्णन जैसा डिप्लोमैट, मैने आज तक नही देखा। उन्होने dialectical materialism मे यकीन रखने वालो को भी इम्प्रैस

कियां उनकी जयानत की जितनी तारीफ की जाये, उतनी ही कम है।

इसके अलावा डिपलोमैटिक पोस्ट टाप मोस्ट उन्होंने होल्ड की, ऐजुके ानल दुनियां मे माने हुए टीचर थे। सब से बड़ी एडमिनिस्ट्रेटिव पोस्ट भी राश्ट्रपति की, जिस पर वे इलैक्ट हुए, वे भी जहां उनकी महानता है वहां देवी लाल जी के जमाने की कांग्रेस की भी बड़ी महानता हैं यही मुल्क है हिन्दुस्तान ही जिसकी रूलिंग पार्टी ने मुल्क की बैस्ट टेलैन्ट को, चाहे वह किसी पार्टी मे थी, कांग्रेस मे थी या न थी लायल और टॉप की पोस्टों पर रखा।

डॉ. अम्बेडकर, भयाम प्र ााद मुकर्जी, डॉ. सर राधाकृश्णन उन लोगो मे से थे, जो इस मुल्क की स्पिरचुअल बैकग्राउंड की जो जमहूरियत है टालरैन्स की, वे लाये। सर राधाकृश्णन जी ने हिन्दुस्तान का सब से बड़ा ऐडमिनिस्ट्रेटिव ओहदा भी, डिप्लोमैटिक ओहदा भी संभाला और टीचर तो वे हमारे थे हीं इतनी बड़ी भाख्सीयत के चले जाने से हिन्दुस्तान को ही नही बल्कि सारी दुनियां को बड़ा भारी नुक्सान हुआ है।

दूसरे मै, खण्डू भाई देसाई के बारे मे अर्ज करना चाहता हूं। मेरी पहल मुलाकात देहली मे उनसे 1958 मे हुई जब जगन्नाथ जी कौ ाल जो अब हमारे एडवोकेट जनरल है, इन्होने कुछ M. Ps. को खाना दिया था। वे भी वहां मौजूद थे। मैंने उनके

बारे मे बहुत कुछ पढ़ा था लेकिन यह खण्डू भाई देसाई है। जो लोग हिन्दुस्तान की इकौनौमिक हिस्टरी से वाकफियत रखते है उन्हे मालूम है कि पिछली सदी और इस सदी के इबतदा मे अहमदाबाद और बम्बई, कलकत्ता और मद्रास, कानपुर एज ए इन्डस्ट्रीयल टाउन बाद मे फील्ड मे आया, ये टाउन ज्यों–ज्यों उभरे इनके साथ साथ लेबर प्रोबलम भी उभरी, लेबर प्रोबल्म के साथ साथ लीडर उभरें कामरेड इन्दु लाल याज्ञिक और खंडू भाई देसाई की गुजरात मे या बम्बई मे वही पोजी ान थी जो जो ी की तमाम हिन्दुस्तान मे थी और गिरि साहब की साउथ इंडिया मे थी। अब उन तमाम लीडरों में से सिर्फ गिरि साहब ही जिन्दा है। मैं इस बड़े भारी ट्रेड–यूनियनिस्ट को एज गवर्नर क्या कहूं, क्योकि गवर्नर तो और भी बहुतेरे रहे है लेकिन जो ऐमीनैन्स उनकी हिन्दुस्तान मे रही है, वह ऐज ट्रेड यूनियनिस्ट लीडर रही है। मुझे बहुत खु ी है कि कौ ाल साहब को भी अब तक याद है। उन्होंने मुझे बहुत बड़ा ट्रिब्यूट पे ा किया और कहा कि पंजाब के सरे जमीन के बारे मे हमारे चाहे कुछ भी इख्तलाफात हो लेकिन पंजाब एक ऐसी जगह है जहां इकौनोमिक बेसिज पर ट्रेन यूनियन बेसिज पर गवर्नमैंट है। उस वक्त जो गवर्नमैंट थी, जिससे बहुत से लोगों को इमो ानली प्यार या किसी को नफरत है, वह छपा। उन्होंने पंजाब से कहा कि पंजाब ही वह पहला सूबा है जहां इकौनौमिक बेसिज पर बेस्ड ट्रेड यूनियनिस्टस की हकूमत कायम हुई।

खण्डू भाई देसाई के बाद श्रीमती नायडू जी का जिक्र आया। इल्मीयत, लनिंग, चार्म्स हुस्न के साथ साथ जेहानत जो उनमे थी, वह उनकी भाख्सीयत का सब से बड़ा पार्ट है। जिस दिन उनकी खबर रेडियों पर आयी कि नाजुक हालत मे है, मै उस वक्त अपने एक बड़े पुराने हम क्लास के साथ राजेन्द्र पार्क मे सैर कर रहा थां वे एस.डी. कालेज मे पढ़ा करती थी। मै डी.ए.वी. कोलेज मे था। उन्होंने मुझे एक ही बात याद दिलायी ओर मुझे यह बात आज तक याद है कि फोरमैन क्रि चयन कोलेज कालेज मे एक डिबेट हुयी और उस डिबेट मे दूसरी यूनिवर्सिटीयों मे भी लोग आये। पंजाब यूनिवर्सिटी यंग स्पीकर्ज यूनियन के मातहत। आगा हैदर साहब प्रि जाईड कर रहे थे जो हाइ कोर्ट के जज थे। जब कोई लड़की आती थी तो जरा नीचे देखने लग जाते और जब कोई लड़का बोलता तो सिर उठा लेते। वे यह आब्जर्व करती रही। जब इनकी बारी आयी तो इन्होंने कहाः ''मिस्टर चेयरमैन'' तो चेयरमैन साहब ने अपना सिर फिर भी नीचे झुकाये रखा। आगा साहब की दाढ़ी होती थी। फिर उन्होंने दाढ़ी पकड़कर कहाः ''मिस्टर चेयरमैन''। तो उन्होंने उन की तरफ देखा तो उसी वक्त वह अपोलोजैटिक होकर कहने लगे I did not mean any discrimination. In the height of modesty, I never see when some lady is speaking. अगनी जो बात नायडू की लड़की ने बड़े मार्के की वह एक और थी। इंगलि ा कीा एक्सैंट ऐसा था कि लोग समझ नही सकते थे कि अगला फिकरा वह उर्दू मे बोल देगी। उन्होंने कहाः ''मियां आगा हैदर, पिछली गर्मियों मे `जब

आप लन्दन में थे तब तक यह मौडैस्टी आप मे नही थी, इस से सारा हाउस हंस पड़ा और उनके इस मजाक की आज तक उस वक्त के कन्टैम्पोरेरीज को याद है। इन्ही के बड़े भाई चट्टोपाई, कजन थे जिन्होंने फस्ट पार्लियामैंट मे अपनी सारी तकरीर इंगलि ा मे पोइटरी मे की थी और वह मालवंकर के बाद पहली मिसाल है क्योंकि मालवंकर जी किसी को भोरो– ाायरी अपनी स्पीचिज मे नी कहने देते थे। वे बाते रिकार्ड मे नही आती थी। वह अनपार्लियामैंट्री लैंग्वेज समझी जाती थी, जैसे कोर्ट मे कोई भोर नही कह सकता इसी प्रकार से वह पार्लियामैंट्री लैंग्वेज नही समझी जाती थी। वे एक ऐसी कल्चर्ड फैमिली से आये जो सारी उमर डैडीकेटिड फ्रीडम फाईटर रही। जो सर्विस उन्होंने ने ान की की, उसका जितना भी हम जिक्र करे, उतना ही कम है।

फिर मैं मलिक खिजर हयात खां के बारें मे अर्ज करना चाहता हूं। वह, मिट्ठा टिवाना एक जगह है, वहां पैदा हुए। सर उमर हयात खां के इकलौते लड़के थे। खिजर हयात की एसोसिए ान या उनकी बातें वगैरा पढक्ष्ने का किसी को भाौक हो तो वह ज्ञानी गुरमुख सिंह मुसाफिर ने एक किताब लिखी है ''पंजाब के बड़े वजीर'', वह पढ़े, मुझे अफसोस है कि उन्होने हमारे चीफ मिनिस्टर नही लिये, ज्ञानी जैल सिंह तक लिये है। हरियाणा भी तो उसी पंजाब का एक पार्ट था। हमारे भी चीफ मिनिस्टरों का उसमे जिक्र होता तो अच्छी बात थी। उन्होंने खिजर हयात जी के बारे मे दो चार बाते लिखी है। एक बात जो मुझे

सबसे ज्यादा पसंद आयी वह यह थी कि वे इंडियन कल्चर के बड़े मद्दा थे। उस समय बहुत सारे लोग ख्दर की अचकनें पहनते थे, चूड़ीदार पाजामें पहनते थे लेकिन जब बाहर जाते तो नकटाई लगाकर जातें वह उस वक्त की इंटरनै ानल आर्गेनाइजे ान मे ये तो अखबारों मे जो खबर उनकी तुर्रेदार पगड़ी, उनकी वह सिलवार और लम्बी अचकन के बारे आयी, उसमें उन्होंने यह लिखा कि यह ड्रैस पहल बार वल्ड मे रिप्रजैंटे ान दे रही है। दूसरी जो सबसे बड़ी बात थी खिजर हयात खां साहब की, वह यह थी कि वे एक फौजी थे, फौजी रहे आखिर तक। सैकंड लानसर्ज मे वे डायरेक्ट कमी ान मे आये थे और सैकंड लानसर्ज मे हिसार के बहुत सारे आदमी, खासतौर से हमारे प्रताप सिंह जी लाम्बा की कांस्टीच्यूऐंसी के आदमी उनके साथी है। उनकी यह एसोसिए ान इन लोगों की तरफ से कभी नही गयी। उनका ख्याल यह था कि टिवाने से हम आये है। हरियाणा से उनकी बड़ी मुहब्बत थी। जो ऐपीसोड उन्होंने लिखा है उससे हिन्दुस्तान के करैक्टर और मलिक खिजर हयात खां के करैक्टर की सही तस्वीर सामने आती है। Just after partition an offer was made by the Muslim League to join the cabinet. जिन्होंने आफर दी वे फिरोजपुर के थे नवाब ममदौद के लड़के जो पहले चीफ मिनिस्टर बने। उनको भी लोग नवाब ममदौट ही कहते थे। उन्होंने यह कहा कि आप हमारी वजारत मे आइये। खिजर हयात खां ने, उस वक्त पंजाबी उर्दू लिखी जाती थी, उसमें उनको जवाब दिया है कि इमैं उस पंजाब का प्रीमियर रहा हूं जिसमे हिन्दु, सिख और मुसलमान

सब थे। अब तुम पंजाब का कब्रिस्तान बनने के बाद, मुझे आफर देकर मेरी तौहीन करते हो कि मैं मुस्लिम लाी ज्वायन कर लूं। वे उन लोगों मे से थे जिन लोगों ने सबसे पहले सेकुलर पार्टी की बुनियाद रखी और हकूमत कायम की। उसके बाद जब डाक्टर खान साहब पाकिस्तान के प्रीमियर बने, तो उन्होने खिजर हयात खां को आफर की कि आप सैंट्रल गवर्नमैंट मे आ जाओ। वे हवाई जहाज के जरिये नवाब कजलवा ा जो इनके समधि थे, उनको लेकर वहां गये भी। वहां जाकर उन्होने पूछा कि यह गवर्नमैंट जो है, इस कोली ान गवर्नमैंट मे क्या मुस्लिम लीग भी भाामिल होंगे ? खान साहब ने कहा, 'हां, यह तो कोली ान गवर्नमैंट है, इसमे मुस्लिम लीग भी भाामिल होगी।' खिजर हयात खां ने उसी वक्त अगले जहाज से अपना टिकट वापिस बुक किया और लाहौर वापिस आ गये। नोट छोउ़ आये, उनसे मुलाकात भी नही की। खिजर साहब किसी फिरकापरस्त पार्टी के साथ एज कोली ान भी बैठने को तैयार नही थे। सैकुलरिजम की उन लोगो मे एक अरज थी। जि लोगो ने ''लास्ट डेज आफर राज'' किताब पढ़ी है, उनको पता होगा कि जब आई.एन.ए. का ट्रायल चला तो तमाम चीफ मिनिस्टर्ज को कान्फीडैं गियज लैटर्ज एड्रैस हुए थे कि आप बताओं आई. एन.ए. के साथ क्या सलूक किया जाये। खिजर हयात खां का जो लैंटर था उसमे ंयह लिखा है कि आई.एन.ए. के साथ वह सलूक किया जाये जो दे ा भक्त सिपाहियों के साथ किया जाता है। उन्होंने आथ जरूर तोड़ी लेकिन दे ाभक्ति के जजबे के नीचे, बिट्रैयल या गद्दारी के नीचे नही। अगर ऐसा नही हुआ

तो आपकी जो रैगुलर आर्मी है, जिसमे एक सिपाही तो आज नौकर है लेकिन हर तीसरा आदमी आई.एन.ए. मे है, यह बगावत कर देगी, आपके खिलाफ हो जायेगी। इस चीज ने उनके ट्रायल का बड़ा इन्फलूऐंस किया। मलिक खिजर हयात डुब्बे वतन थे, सिपाही थे, एक डैमोक्रैट थे और सब से बड़ी बात यह है कि अपनी जवाब के पक्के थे मौलाना आजाद जिन्होंने उनके बारे मे लिखा है। लिखते है कि मेरे पास एक सिख डैपुटे ान आया मास्टर तारा सिंह के साथ। उन्होंने कुछ अ योरैन्स चाहे कि पार्टी ान के बाद क्या होगा। तों मैंने कहा कि आप बताओ क्या क्या हो। उन्होनें कहा कि आप यह यह चीजे खिजर हयात से कह दै। यह वह वक्त था जिस वक्त खिजर और सच्चर की गवर्नमैंट थी। खिजर की जबान लोहे की जबान है। अफसोस कि ऐसे आदमी हमारे बीच से चले गये। मै अपने जजबात लीडर आफर दी हाउस के साथ बाबस्ता करते हुए उन सब के सामने अकीकत के साथ सिर झुकाता हूं।

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल): स्पीकर साहब, पिछले जितने भी सै ान हुए, उन सबमे ही ऐसा हुआ है और ऐसा लगता है कि दे ा की स्वतन्त्रता के लिये फ्रीडम फाईटर के तौर पर जिन्होंने काम किया और दे ा की स्वतन्त्रता के बाद भारत की वृद्धि और विकास के अन्दर बढ़–चढ़ कर अपना रोल अदा किया, वे महान भाख्सियतें एक–एक करके आज हमारे बीच से जुदा हो रही है। उसी प्रकार से आज के इस भाोक प्रस्ताव के

अन्दर भी हम उन महान विभूतियों को श्रद्धंजलि अर्पित करने के लिये यहां हाउस मे इकट्ठे हुए है। मैं बड़ी तफसील के साथ जैसे कि यहां पर कहा गया है, उनके बारे मे नही जाऊंगा। मैं केवल दो–एक हमारे डाक्टर सर्वपल्ली राधाकृश्णन जी हैं मैं समझता हूं कि मौलूदा जमाने के अन्दर, जिसे हम मौडर्न युग कहते है, वे सारे संसार के अन्दर भारतीय संस्कृति के प्रतीक रहे। और हिन्दु फिलासफी के मान बिन्दू बनकर उन्होंने हिन्दू संस्कृति को विदे ाो मे पहुंचाया। वे दे ा के लिए एक मार्ग द र्ाक थे। अपनी योग्यता और कर्मठता के कारण वे राश्ट्रपति के पद पर पहुंचे। मै तो केवल उनके बारे मे इतने ही भाब्द कहूंगा कि राजनीति के अन्दर होते हुए भी वे राजनीति से अलाहिदा रहे जैसे कि कीचड़ के अन्दर कमल का फूल रहता है। आज उनकी मृत्यु से जो दे ा मे एक खला पैदा हुआ है, मे समझता हूं कि वह पूरा नही हो सकता। उनका पैगाम एक ऐसा पैगाम था जिसे हम पैगाम ही नही कह सकते बल्कि यह कह सकते है कि दूनिया के के सामने आज के युग के अन्दर जितनी फिलौसफियां है, उनमे हिन्दू फिलासफी व हिन्दू धर्म को उजागर कर दे ा की प्रतिश्ठा को बढ़ाया है।

इसके साथ ही दूसरे महान नेता श्री खंडू भाई देसाई है। उनका भी अपने दे ा के अन्दर एक अलाहिदा स्थान हैं विचारधारा का इख्तलाफ हो सकता है लेकिन ट्रेड यूनियन एक्टीविटीज के अन्दर उन्होने जो काम किया है, सारे भारत के लोग उसको भूल नही सकेंगे। लेबर मूवमैंट के लिए उन्होंने अपने

जीवन को लगायां वह पहले ही व्यक्ति थे जिनके जीवन के अन्दर इंटक को बनाया गया और 1947 से लेकर 1950 तक वह इसके सैक्रेटरी रहे और 1950 से लेकर 1953 तक प्रधान के पद पर काम किया। स्वतन्त्रता के बाद उन्होंने मजदूरों के हकूक के लिए और उन्हे संगठित करने के लिए जो काम किया, उसे हम भूल नही सकेंगे।

इसी प्रकार से मिस पदम जा नायडू है। मैं उनका जिक्र करना बहुत जरूरी समझता हूं। उन्होंने इंडियन रैडक्रास सोसायटी के चेयरमैंन की हैसियत से बहुत काम किया है। जब बंगला दे ा से करोड़ो की तादाद मे रिफयूजीज भारत आए औरजिस प्रकार से रैडक्रास के द्वारा सहायता कार्य किया गया उससे उनका नाम भारत के अन्दर सदा रो ान रहेगा। एक फ्रीडम फाईटर सारा जीवन अपने दे ा के लिए सोचता है और जो भी काम करता है वह दे ा की भलाई को सामने रखकर करता है। उन्होंने न अपने परिवार के लिए और न अपने निजी जीवन के लिए कुद सोचा। इसी प्रकार से उन्होंने बड़ी बहादूरी के साथ हैदराबाद के निजाम का मुकाबला किया। निजाम के आगे सिर नही झुकाया बल्कि मजबूती के साथ उसका मुकाबला किया। यह भी तारीख के अन्दर एक रो ान पहलू हमारे सामने रहेगा।

इसी तरह से सर खिजर हयात खां टिवाना को, हम लोग जो आजादी के बाद पाकिस्तान से आए, नही भल सकते। यह वही आदमी था जिन्होंने मुस्लिम लीग से कोई गठजोड़ नही

किया और वजारत से इस्तीफा दे दिया लेकिन दे ा को दो टुकड़ो के अन्दर तकसीम करने वाली बात पर अपना सिन नही झुकाया। हम इनको कभी नही भूल सकते।

इसी तरह से और भी महानुभाव है, विभूतियां है जिनका इस प्रस्ताव के अन्दर जिक्र आया है। स्पीकर साहब, इस संसार के अन्दर हजारों लोग रोज पैदा होते है और हजारे लेाग रोज मरते है लेकिन वे बडी भाख्सियत होती है और उनके आगे सर झुकता है जिनको जनता के नुमांयदे On the floor of the House श्रद्धांजलि अर्पित करते है। मैं लीडर आफ दी हाउस ने जो भाोक प्रस्ताव प्रस्तुत किया है, उसका अनुमोदन करता हूं और प्रभु से यह प्रार्थना करता हूं कि वह उनको अपने चरणो मे स्थान देक। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवारों को इस दु:ख को बर्दा त करेने की भाक्ति प्रदान करे।

श्रीमती लेखवती जैन (अम्बाला): स्पीकर साहब हाउस के सामने जो भाोक प्रस्ताव है मै अपने आपको उस भाोक प्रस्ताव मे सम्मिलित करती हूं। हाउस के अन्दर लीडर आफ दी हाउस और आनरेबल मैंबर्ज ने जो विचार प्रकट किए है मैं उनसे कहमत हूं। जनाब, हमारे दे ा की ऐसी भाख्सियते हमे छोड़ गई है जिनकी जगह पूरी होना बहुत मु कल है। श्री राधा कृश्णन हमारे दे ा के बहुत बड़े महान व्यक्ति थे। उनके बारे मे जितना कहा जाए मैं समझती हूं कि वहबहुत कम है।

इसी तरह से श्री खंडू भाई देसाई है जिन्होने गरीबों औरलेबर के अन्दर बहुत काम किया है। डॉ. राधा कृश्णन और खंडू भाई देसाई से मेरी पर्सनल वाकफियत थी। मैंने इनसे बातें की हैं और इनको अच्छी तरह से जानती हूं।

मुझे बड़ा अफसोस है कि आज हमारे दे ा की एक और महान हस्ती, एक बहुत बड़ी औरत पदमजा नायडू चली गई है। आज जब कि women year चल रहा है, इस साल मे पदमजा नायडू हमारे दरमियान से न जाती। उनके जाने से दे ा को और वि ोश रूप से स्त्री समाज को बहुत दुःख होगा कि इस साल मे हमे बहुत कुछ मिलने वाला था और हमें उनके ऊपर बहुत नाज था। इस साल मे हमारे बीच से न जाती तो कितना अच्छा होता। इसके बाद राजेन्द्र नारायण सिंह दयो, श्री प्रताप सिंह जो असैम्बली के मैंबर रहे, श्री देवेन्द्र नाथ महतो, प्रिंसिपल रला राम, इन सब हस्तियों के जाने से बड़ा अफसोस हुआ है। इस हाउस के अन्दर अभी जिक्र आया सर खिजर हयात खां टिवाना का, जो आज नही है। मुझे उनसे मिलने का मौका मिला 1937 मे`जब कि इलैक ान होने के बाद वे चीफ मिनिस्टर बने। उस वक्त मैं उस हाउस मे तो नही थी लेकिन मुझे याद है कि जब भी कोई उनसे मिलता तो वे बड़े प्रेम से मिला करते थे। मैं उनकी वह बात नही भूल पाती जो वह मिलते ही कहा करते थे– ''राजी–बाजी'' यह भाब्द मै समझती हूं, भूलाए नही जा सकते। इन चन्द भाब्दों के साथ मैं अपनेआपको इस भाोक प्रस्ताव से सम्मिलित करती हूं।

Mr. Speaker: Hon. Members, in the passing away of Dr. S. Radhakrishnan, former President of India, and the country has become poorer due to the loss of a seasoned statesman and a Philosopher. Befor assuming Presidency, he held many offices both at home and abroad with dignity and distinction. The country will always remember him for espousing the cause of the teachers in this country. As Vice-Chancellor of Andhra University and later as Honorary Vice-Chancellor of Banaras Hindu University, he gave a new direction to the adminstration of education. His talks and speeches reveal his intellectual gifts and the highest level of knowledge of human nature. He was an orator par excellance. As Indian Ambassador to Soviet Union he countributed a lot in forging the closest relations between the two countries. As our Vice-President and Chairman, Rajya Sabha from 1952-62 he contributed significantly to the consolidation of our political and parliamentary traditions. His death has created a void which willbe difficult to fill up.

The country has also suffered a loss on account of the death of Sh. Khandubhai Desai, former Governor of Andhra Pradesh. He was one of the architects of the Trade Union movement of India and seved the country bothg inpre-independance and post-independance periods. He was memeber of the Bombay Assembly, in 1937. Later, he was a member of the constituent Assembly, Lok Sabha and Rajya Sabha and wa also Labour Minster in the Central Government from 1954-57.

Miss Padmaja Naidu, veteran freedom fighter and former Governor of West Bengal also passed away the other

day at the age of 75. After relinquishing the charge of Governorship, she was closely associated with various social organisations such as Jawahrlal Nehru Memorial Fund, All India Handicrafts Board, Bharat Sevak Samaj and Hydrabad State Youth Welfare Board. She was also Chairman of the Indian Red Cross Society and the Bangla Desh Refugee Assistance Committee. Like her mother Smt. Srojini Jaidu, Miss Padmaja Naidu has aslso served the nation in various capacities. She was also elected to the parliament in 1950 but resigned her seat two years later because of ill health. She was really a grat daughter of a great mother.

Sh. R.N. Singh Deo, ex-Chief Minister, Orissa was also a renowned Parliamentarian and a leader of the Swatantra party.

Sh. Partap Singh and Sh. Mahato were both members of our Parliament.

Principal Rala Ram was my colleague in the composite Punjab VidhanSabha. He did a lot of work for the uplift of his Constituency. He had dedicated himself of the cause of Arya Samaj and education. After the formation of Regional Committees, he was elected as Chairman of the Punjabi Regional Committee.

Malik Khizar Hayat tiwana was the Chief Minister of the pre-partitioned Punjab. He was a symbol of Hindu-Muslim Unity.

I full associate myself with the deep feelings that have been expressed about the passing away of the great leaders and I shall no doubt convey the sympathies of the

House to the bereaved families. Now I request you to kindly observe lilence for a minute while standing as a mark of respect to the deceased.

(The House then observed one minute's silence while standing as a mark of respect to the departed souls).

चौधरी चांद रामः स्पीकर साह, चीफ मिनिस्टर साहब के खिलाफ एक प्रिविलेज मो ान है..........(विघ्न)......

श्री अध्यक्षः अभी मुझे सैक्रेटरी ने बताया है कि दो कल अटैन ान मो ान्ज और एक प्रिविलेज मो ान आए है। These are under my examination and I will give my decision.

चौधरी राम लाल वधवाः स्पीकर साहब, मेरी एक प्रार्थना है कि दो काल अटैन ान मो ान ....(ोर).....

Mr. Speaker: I have already said these are under my examination. You gave these notices late.

अध्यक्ष द्वारा घोशणाएं

(क) सभापति तालिका

Mr. Speaker: Under Rule 13 (1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, I nominate the following Members to serve on the Panel of Chairman:-

1. Rao Nihal Singh,

2. Rao Dalip Singh

3. Chaudhri Ishwar Singh

4. Chaudhri Manphul Singh

(ख) याचिका समिति

Mr. Speaker: Under Rule 286 (1) of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Vidhan Sabha, I nominate the following Members to serve on the Committee on Petitions:-

1. Smt. Lekhwati Jain (Deputy Speaker),

Ex-Officio Chairman;

2. Rao Dalip Singh;

3. Sh. Gulab Singh Jain;

4. Chaudhri Phool Chand (Rohat); and

5. Chaudhri Phool Chand (Mullana).

I have to inform the House that in pursuance of Rule 224 of the Rules of Procedure and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, the Seventh Report of the Committee on Subordinate Legislation for the year 1974-75 was presented to me by the Chairman of the Committee on Subordinate Legislation as this could gnot be presented to the House before the expiry of the term of the office of the

Committee for the year 1974-75 due to the adjournment of the House *sine-die* on the 17th January, 1975.

In pursuance of the aforsaid rule, I had ordered the printing of the seventh Report of the Committee on Subordinact Legislation for the year 1974-75.

Now I lay a copy of this Report on the Table of the Hosue.

I have to inform the Hosue that in pursuance of the provision of Rule 224 of the rules of Procecduce and Conduct of Business in the Haryana Legislative Assembly, the 8th Report of the Public Accounts Committee and 7th Report of the Estimates Committee were presented to me by the Chairmen of the respective Committees as these could not be presented to the House before the expiry of the term of these Committees for the year 1974-75 due to the adjournment of the House *sine-die* on the 17th January, 1975.

In pursuance of the provisions of the aforsaid rule, I had ordered the printing, publication and circulation of the above-mentioned Report.

I now lay a copy each of these Reports on the Table of the Hosue.

सदन के मेज पर रखे गए/पुनः रखे गए कागज पत्र

State Minister for Irrigation & Power (Sardar Harmohinder Singh Chatha): Sir I beg—

To lay on the Table the Indian Electicity (Haryana Amendment and Validation) Ordinacne, 1975 (Haryana Odinance No. 1 of 1975).

I also beg to lay on the Table the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Ordinacne, 1975 (Haryana Odinance No. 2 of 1975).

I also beg to lay on the Table the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendement and Validation Ordinacne, 1975 (Haryana Odinance No. 3 of 1975).

I also beg to lay on the Table the Transport Department's Notification No. G.S.R.34/C.A.4/39/Ss 24 and 41/75, dated the 4th April, 1975, regarding the Punjab Motor Vehicles (Haryana 1st Amendment) Rules, 1975, as required under section 133 (3) of the Motor Vehicles Act, 1939.

I also beg to re-lay on the Table a copy the Notification No. G.S.R.77/H.A.14/74/S.67/74, dated the 12th June, 1974, regarding the Haryana Children Rules, 1974, as required under section 67 (3) of the Haryana Children Act, 1974.

Sir, I also beg to lay on the Table the General Asministration Department's Notification No. G.S.R.8/Const./Art.320/Amd (3)/75, dated the 17th January, 1975, regarding the Haryana Public Service Commission (Limitation of Functions) Third Amendment Regulations, 1975, as required under Article 320 (5) of the Constitution of India.

Sir, I also beg to lay on the Table the General Asministration Department's Notification No. G.S.R.15/Const./Art.320/Amd (4)/75, dated the 10th February, 1975, regarding the Haryana Public Service Commission (Limitation of Functions) Fourth Amendment Regulations, 1975, as required under Article 320 (5) of the Constitution of India.

Sir, I also beg to lay on the Table the Annual Report on the working of the Haryana Public Service Commission from 1st April, 1973 to 31st March, 1974, as required under Article 323 (2) of the Constitution of India.

सचिव द्वारा घोशणाएं

Mr. Speaker: Now the Secretary will make annuncements.

Secretary: Sir, I beg to lay on the Table the House of a Statement showing the Bills which were passed by the Haryana Legislative Assembly during its last Session held in January, 1975, and have since been assented to by the Vovernor/President.

STATEMENT

1. The Haryana Legislative Assembly (Allowances of Members), Bill, 1975.
2. The Haryana Legislative Assembly Speaker's and Deputy Speaker's Salaries and Allowances, Bill, 1975.

3. The Kurukshetra University (Amendment) Bill, 1975.

4. The Haryana Appropriation (No. 2) Bill, 1975.

5. The Haryana Appropriation Bill, 1975

6. The Haryana Appropriation (No. 2) Bill, 1975

7. The Haryana Development and Regulation of Urban Areas Bill, 1975

8. The Haryana Requisitioning and Acquisition of Moveable Property Bill, 1975

Secretary: Sir, I have inform the House that the Haryana Public Wakfs (Extension of Limitaion) Bill, 1974, which was passed by the Haryana Legislative Assembly on the 26th November, 1974, have since been assented to by the President.

Sir, I beg to lay on the Table the House of a copy each of the following documnets received from the Council of States regarding the ratificaiton of the Constitution (Thirty-Eighth Amendment) Bill, 1975 as passed by the Houses of Parliaments.

(i.) Letter dated the 28th April, 1975, received from the Secretary General, Rajya Sabh.

(ii.) The Constitution (Thirty-Eighth Amendment) Bill, 1975 as introduced in Lok Sabha (English and Hindi versions).

(iii.) The Constitution (Thirty-Eighth Amendment) Bill, 1975 as passed by House of Parliament (English and Hindi versions).

अनुसूचित जातियों तथा अनुसूचित आदिम जातियों के कल्याण संबंधी समिति का द्वितीय प्रतिवेदन पे ा करना

Chairman, Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes (Sh. Nihal Singh): Sir, I beg to present the Second Report of the Committee on the Welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes.

चौधरी चांद राम: स्पीकर साहब, यह रिपोर्टस वगैरह तो आपने पे ा कर दी लेकिन इन पर बहस के लिये तो टाईम मिलना चाहिये। जैसे पब्लिक सर्विस कमी ान की रिपोर्ट है, वैलफेयर आफ भौडयूल्ड कास्ट और भौडयूल्ड ट्राइब्ज वगैरह है, कम से कम इन पर डिसक ान के लिए तो आप कोई समाधान निकालें।

Mr. Speaker: The Business Advisory Committee is meeting today at 5 P.M. We will consider it there.

श्रीमती चन्द्रावती: On a point of order, Sir, यह तो जैसे हरियाणा स्टेट इलैक्ट्रीसिटी बोर्ड आर्डीनैंस वगैरा आते है और फिर उनके बारे मे अमैंडिंग बिल आते है, इस बारे मे मैं यह निवेदन करना चाहती हूं कि इनके साथ अगर इनके मेन ऐक्टस

अमैंडमैंटस को समझ सकें और अपने विचार रख सके। मेन ऐक्ट हमारे पास होता नही है.....।

श्री अध्यक्षः आर्डर प्लीज। उस आइटम को तो पहले हाउस के सामन आने दो।

श्रीमती चन्द्रावतीः मैं तो जनाब यही बात आपके नोटिस मे लाना चाहती थी कि आर्डीनैंसिज के बारे मे जो बिल आते है, उनके मेन ऐक्टस भी अगर साथ मैं मिल जायें तो उनको समझने मे आसानी रहती है।

श्री अध्यक्षः हर बिल के साथ रैलेवैंट ऐक्ट मे से रैलेवैंट ऐक्सट्रैक्ट लगाया हुआ है। सारा ऐक्ट कैसे साथ लगायेंगे ?

सरकारी संकल्प

Chief Minister (Chaudhri Bansi Lal): Sir I beg to move—

That this House ratifies the amendments to the Constitution of India falling withing the purview of the proviso to clause (2) of Article 368 thereof, proposed to be made by the Constitution (Thirty Eighth Amendment) Bill, 1975, as passed by the two Houses of Parliament which seeks to make Sikkim a State in the Union and the Short title of which has been changed into "the Constitution (Thirty Sixth Amentment) Act. 1975."

Mr. Speaker: Motion moved—

That this House ratifies the amendments to the Constitution of India falling withing the purview of the proviso to clause (2) of Article 368 thereof, proposed to be made by the Constitution (Thirty Eighth Amendment) Bill, 1975, as passed by the two Houses of Parliament which seeks to make Sikkim a State in the Union and the Short title of which has been changed into "the Constitution (Thirty Sixth Amentment) Act. 1975."

चौधरी दलसिंह (जींद): अध्यक्ष महोदय, पार्लियामैंट मे भारतीय संविधान को सं ाोधित करके सिक्किम भारत का 22वां राजय बनाने जा रहे है और इसकी रैटीफिके ान के लिये सरकार की तरफ से प्रस्ताव पे ा किया गया है। जहां तक इस प्रस्ताव के समर्थन का संबंध है, मैं समझता हूं कि कोई भी व्यक्ति जिस के लिद मे दे ा का हित है, इसकी ताईद करेगा। जहां तक मेरा सम्बंध है मै इसकी पुरजोर ताईद करता हूं। स्पीकर साहब, मैं यह कहे वगैर नही रह सकता कि जो अब पिछले महीने किया गया है यह बहुत पहले होना चाहिये था और यह बहुत पहले हो सकता था क्योकि सिक्किम बाकायदा तौर पर 1921 मे इंडियान चैंबर आफ प्रिंसिंज का मैंबर था और जिस वक्त भारत मे दूसरी रियासतों का मर्जर हुआ था, उसी वक्त ही सिक्किम का भी मर्जर होना चाहिये था। खैर, अगर इस सरकार को देर के बाद भी यह बात समझ आ गई है तो भी बहुत खु ाी की बात हैं लेकिनउस वक्त यह काम हो जाता तो करोड़ों रूपये जो चोग्याल को मिलते

रहे और वह अपने ऊपर ही उसे खर्च करता रहा यह बचाये जा सकते थे और यह रा ि ा सिक्किम की जनता के लिये डिवैल्पमैंट पर खर्च हो सकती थी। मै अर्ज करता हूं कि पिछले महीने की दस तारीख को सिक्किम असैम्बली ने सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास किया कि सिक्किम का विलय भारत के साथ किया जाये और चोग्याल के ओहदे को खत्म किया जायें फिर पिछले महीने की ही 16/17 तारीक्ष को सिक्किम कैबिनट के सारे मैंबर देहली मे आकर प्रधान मंत्री और राश्ट्रपति से मिले और उन से प्रार्थना की कि उन्होने जो प्रस्ताव पास किया है, उसे जल्दी से जल्दी लागू किया जाये। इसके बाद फिर वहां पर जनमत हुआ जिसमे वहां 63 फीसदी लोगों ने हिस्सा लियां 59369 लोगो ने मर्जर के हक मे और केवन 1494 लोगों ने इस के खिलाफ वोट दिया। जिस वक्त यह वाक्या हो रहा था, उस वक्त ही वहां की प्रजातन्त्र पार्टी के चेयरमैंन, जो चौग्याल के बहनोई है, उन्होंने एलान किया कि वह अपनी पार्टी को भंग करते है। यह हिस्टौरीकल वाक्यात है जिनको भुलाया नही जा सकता। इस संबंध मे मैं एक बात जरूर कहना चाहता हहूं कि जितनी जल्दी यह काम किया गया है यह स्वाभाविक और उचित नही लगता है। आज से 22/24 साल पहले जब सिक्किम के लोग यह मांग करते रहे कि भारत के साथ उनका मर्जर किया जाये तब कोई कार्यवाही नही की गई और अब एक महीने के अन्दर ही सारी कार्यवाही की गई जो कि स्वाभाविक नही मालूम पड़ती है बल्कि यह सरकार की कमजोरी और कोताही जाहिर करती है। कौन सी ऐसी बात थी कि अप्रैल के महीने मे ही

प्रस्ताव पास हो गया, अप्रैल के महीने मे ही वहां की कैबिनट के मैंबर प्रधान मंत्री से भी मिल लिये और अप्रैल के ही महीने मे ही वहां रिफ्रैंडम हो गया और.....(विघ्न)..... मेरे कहने का मतलब यह है कि यह सारी बातें 22/24 साल पहले हो जानी चाहिये थी। अब लोग भाक करते है कि पुलीटिकल आधार पर यह बाते की गई है। सिक्किम की सरहदें उन दे ाो से मिलती है जिनकी हमारी तरफ नजरे अच्छी नही है और मैं समझता हूं कि इस सारी बात की जिम्मेदारी चोग्याल पर है क्योकि उस ने गलत काम किये और उसके गाईडज ने लोगों को मारना भाुरू कर दिया। खैर, में अब ज्यादा न कहता हुआ यही अज्र करता हूं कि अब जो कदम उठाया गया , ठीक उठाया गया है और अच्छा है हालांकि यह बहुत देर से उठाया गया है लेकिन फिर भी अच्छा ही किया गया है। इन भाब्दों के साथ मैं इस प्रस्ताव का समर्थन करता हूं।

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल): स्पीकर साहब, मे इस प्रस्ताव का हार्दिक स्वागत करता हूं और भारत सरकार को मुबारिकबाद देता हूं कि बड़ी भीघ्रता के साथ उन्होंने जो बात आज से 25 साल पहले करनी चाहिये थी वह अब करके सिक्किम के लोगों की मनोकामना को पूर्ण किया है.....

सिंचाई एवं बिजल मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त): उस दिन करते तो भी कुछ न कुछ जरूर कहते (हंसी) बात भली हो या बुरी, कहना जरूर है कुछ।

चौधरी राम लाल वधवा : कहने मे कमी आप भी नही करते। हम भी कहने के लिये आये है.....(विघ्न).....तो स्पीकर साहब मुझे खु ाी है कि सिक्किम मुकम्मल तौर पर भारत का हिस्सा बन रहा है और इसका भारत मे अलहाक हो रहा हैं सिक्किम के लोगों ने आजादी के बाद भी इस वाब के लिये आवाज उठाई थी और मैंने इस बारे मे पूरी तफसील के साथ पिछली दफा जब 35वी अमैंडमैंट आई थी, बात कही थी कि यह जो सिक्किम को एसोि ायेट स्टेट का दर्जा दिया जा रहा है, यह संविधान की स्प्रिट के खिलाफ है और यह दे ा के हित की बात नही है क्योकि फिर दुसरी स्टेटस भी इसी प्रकार से क्लेम कर सकती है। खैर अब मुझे खु ाी है कि इन्होंने अपनी गलती को स्वीकार किया है और अब सुधार किया है। स्पीकर साहब, सिक्किम का अपना एक महत्व है। इसकी सरहदे चीन के साथ लगती है जिसके साथ हमारे ताल्लुकात अच्छे नही है। चीन ने हमारे दे ा के बहुत बड़े इलाके पर कब्जा कर रखा है। इन हालात मे सिक्किम मे जो हालात चल रहे थे अगर उनको उसी तरह से चलने दिया जाता तो यह दे ा के लिये बहुत हानिकारक बात थी। जो कुछ चोग्याल वहां पर कर रहा था जिस प्रकार के वहां हालात पैदा करने की वह कोि ा ा कर रहा था, वह दे ा के हित मे नही थे। चोग्याल के औहदा को खत्म करके सिक्किम का भारत के साथ अलहाक किया जा रहा है और इस तरह करके सिक्किम के लोगों को भारत के लोगों की तरह समान अधिकार दिये जा रहे है। ऐसा करके सरकार ने भारत और सिक्किम की

सुरक्षा की तरफ ध्यान दिया है। आज चीन इस बारे मे भाोर मचा रहा है लेकिन वह भाायद यह बात भूल जाता है कि सिक्किम के लोगों ने तो आज से 25 साल पहले भारत मे मिलने के लिये आवाज उठाई थी और उस वक्त से उठाता आ रहा है लेकिन दूसरी तरफ तिब्बत पर उस ने लोगों की मर्जी के खिलाफ कब्जा कर दिया है और जबरदस्ती अपने मे भाामिल कर दिया है। आज चीन को यह भाोर मचाने का हक नही पहुंचता है। उसी प्रकार कह हालत आज पाकिस्तान की सलामती के लिए कोि ा ा की है। आज इन दोनों मुल्कों की परवाह न करते हुए भारत सरकार ने जो कदम उठाया है वह सराहनीय है। चोग्याल की व्यक्तिगत हकूमत सिक्किम पर थी। वह सिक्किम की जनता के ऊपर अत्याचार करता था। बहुत पहले हमारे दे ा मे होम मिनिस्टर सरदार पटेल होते थे हजन्होंने दे ा की सारी रियासतों का भारत के अन्दर अलहाक किया और राजे–महाराजाओं के व्यक्तिगत भाासन को खत्म किया। लेकिन इन सब बातों के होते हुए एक राजा का राज देखते रहे और 25 साल तक हमने उसकी परवाह न की लेकिन आज चोग्याल की अपनी करतूतों के कारण भारत सरकार ने उचित कार्यवाही करके रैटीफिके ान के लिए जो बिल सदन के सामने पे ा किया है, मैं उसका समर्थन करता हूं। लेकिन इसके साथ ही साथ स्पीकर साहब, सदन मे एक बात कहे वगैर मैं नही रह सकता कि जहां हम सिक्किम के लोगों को अपने दे ा के लोगों के साथ समान अधिकार दे रहे है, भारत जैसे विकास ाील और प्रगति ाील दे ा के लोगों को एक समान

तरक्की करने, प्रगति करने के अवसर प्रदान करने के लिए भारत सरकार उनको जहां नागरिकता दे रही है, वहां इस बिल के अन्दर क्लाज 3 (जी) जोड़ दी गई है जिसको कम से कम मैं पसन्द नही करता। क्लाज 3 (जी) के अन्दर लिखा है–

3. "After Article 371 E of the Constitution, the following shall be inserted, namely:-

"371 F. Notwithstanding anything in this Constitution-

(g) the Governor of Sikkim shallhave special responsibility for peace and for equitbale arrangements for ensuring the social and economic advancement of different sections of the population of Sikkim and in the discharge of his special responsibility under this Clause of Governor of Sikkim shall, subject to such directions as the President may, from time to time deem fit to issue, act in his discretion".

स्पीकर साहब, अपने कांस्टीच्यू ान के अन्दर हम सिक्किम को भारत की दूसरी स्टेटस के बराबर एक अधिकार दे रहे है आर्टिकल 2–ए के नीचें आर्टिकल 2–ए के माध्यम से सिक्किम को एसोि ाएट स्टेट के रूप मे लाया गया है। उसको समाप्त करके आर्टिकल 2 के नीचे नई स्टेट को भारत के ढांचे के नीचे के ला रहे है। इसका सीधा सा मतलब जो आज जनता के सामने आता है, वह यह है कि जो अधिकार भारत की जनता को है वही अधिकार उनको होंगे। आज डैमोक्रेटिक, लोकतांत्रिक, प्रजातांत्रिक ढांचा भारत की जनता को मिला है और उसी प्रकार

का ढांचा सिक्किम की जनता को मिलेगा। लेकिन क्लाज 3 (बी) के अन्दर गवर्नर को स्पै ाल पावर्ज दे दी है। मैं समझता हूं कि दूसरी जो क्लाजिज आई है उन के अन्दर क्लीयर लिखा है कि कौंसिल आफ मिनिस्टर होगी जो इलैक्टिड होगी। मौजूदा कौंसिल जो अप्रैल, 1974 के अन्दर चुनाव के जरिए चुनी गई, वह भी कायम रहेगी। असैम्बली को भी पावर रहेगी, वह कानून भी पास कर सकेगीं लेकिन कि असैम्बलियों की स्वतन्त्रता पर, इलैक्टिड बौडीज के राईटस पर यह एक कुठाराघात है। क्या चोग्याल की एजेंसी को इस लिए खत्म नही किया कि चोग्याल एक व्यक्ति के रूप मे, एक राजा के रूप मे स्पै ाल पावर्ज लेकर जनता के हित के विरूद्ध कार्य कर रहा था ? अगर स्पे ाल पावर्ज लेकर जनता के विरूद्ध कार्य कार्य कर रहा था तो वही चोग्याल के राईटस लेकर आर्टिकल 3 (जी) के द्वारा गवर्नर को क्यो दिए गए है ? इसलिए मैं समझता हूं कि विधान की यह आर्टिकल 3 (जी) बिल्किुल अनकास्टीच्यु ानल है। आप इसके अन्दर यह देखे कि गवर्नर की जो एजेंसी है, उसके ऊपर आर्टिकल 153 से लोकर 162 तक मे लिखा है। जो गवर्नर आफ स्टेटस है, उन क्लाजिज के अन्दर 'गवर्नर' इन्स्टीच्यू ान को डील किया गया है। आर्टिकल 102 के अनुसार एक गवर्नर होगा। आर्टिकल 154 के तहत लिखा हैं एग्जैक्टिव पावर्ज स्टेट की क्या होगी ? आर्टिकल 155 मे है कि गवर्नर एप्वायंट कैसे होगा। आर्टिकल 156 मे लिखा है कि टर्म्ज क्या होगीं आर्टिकल 157 मे है कि क्वालिफिके ान फार अप्वायंटमैंट क्या होगी। आर्टिकल 158 मे है कि कंडी ान आफ

गवर्नर्ज आफिस क्या होगी। उसके अन्दर यह लिखा है कि गवर्नर जो है वह कौंसिल आफ मिनिस्टर .....(व्यवधान).....

Mr. Speaker: Order please. This has been passed by both Houses of Parliament, and this has come for ratification.

Chaudhri Ram Lal Wadhwa: We can disapprove it if it is unconstitutional. If we are going to ratify it, when we have a right to give and forward our sentiments to theCentral Government.

Mr.Speaker: The resolution before the House is for ratification.

चौधरी राम लाल वधवा : कांस्टीच्यू ानल अमैंडमैंट तब होगी जब आधी असैम्बलियां इसको रैटीफाई कर देगी और प्रेजीडैंट उसको अप्रूव करेगा। जब प्रेजीडेंट के पास अप्रूवल के लिए जाएगा तो राश्ट्रपति को अधिकार है कि कोई क्लाज जिसको वह अनकांस्टीचू ानल समझे, उसे पार्लियामैंट को दोबारा रैफर कर सकता है। इसलिए इस मे जो लीगल फला है, अनकांस्टीच्यू ानल बाते हैख वह मैं सदन के सामन रख रहा हूं और वे सदन के सामने आनी भी चाहिए ताकि राश्ट्रपति उनको देख सके। स्पीकर साहब, इसके अन्दर आर्टिकल 160 मेन क्लाज है। इसमें लिखा है–

"160. The President may make such provisions as he thinks fit for discharge of the functions of the Governor of a State in any contingency not provided in this Chapter."

लेकिन इसके अन्दर यह था कि गवर्नर कौंसिल आफ मिनिस्टर्ज के म ावरे से काम करेगा लेकिन यह कर दिया है कि गवर्नर जो चहोगा, कौंसिल आफ मिनिस्टर्ज उसे अनुसार काम करेगी और विधान सभी को अंगूठा लगाना पड़ेगा। यह चीज हमारे फण्डामैंटल राइट्स के अगेन्सट जाती है। आर्टिकल 164 के अन्दर लिखा है–

"The Council of Minsters shall be collectively responsible to the Legislative Assembly of the State".

इस आर्टिकल के तहत कौंसिल आफ मिनिस्टर्ज कुलैक्टिवली रिस्पौंसिबल होगीं असैम्बली वहां बैठ कर सारे सिक्किम के लोगों की बातों पर विचार करेगी लेकिन यहां सारे अधिकार एक गवर्नर को दे दिए गए है जो खतरनाक चीज है। डैमोक्रेसी के अन्दर अगर हम यह चीज पास कर देते है कि गवर्नर को पावर दी जाएं तो कल को हरियाणा और दूसरी स्टेटस की जो विधान सभाएं है वे भी कांस्टीच्यू ानल अमैंडमैंट की मांग करेगी। कांस्टीच्यू ान के अन्दर अमैंडमैंट लाकर उसके अधिकार गवर्नर को दिए जा सकते है जो कि लोकतान्त्रिक ढांचे की स्पिरिट के विरूद्ध है। यह डिकटेटराना निजाम का कदम है। स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा सदन के सामने रखना चाहता हूं कि जब यह क्लाज राश्ट्रपति इाको स्वीकृति न दे। हमें इस बात की क्षु ाी है कि सिक्किम भारतवर्श की दूसरी स्टेटों की तरह एक स्टेट बन गई है। मुझे इस बात की खु ाी है कि सिक्किम भारतवर्श की

दूसरी स्टेटों की तरह एक स्टेट बन गई है। मुझे इस बात की खु ाी हैं इसके बारे मे मैं एक दिन डिटेल मे पढ़ रहा था। मैंने असैम्बली के पेपर भी पढ़े। जब पार्लियामैंट के सदस्य इस पर बोल रहे थे तो एक कम्यूनिस्ट सदस्य और एक कांग्रेसी सदस्य श्री एची.डी. मालवीया और जैड.ए. अहमद ने कहा था कि सिक्किम के लोग भारत के साथ मिलना चाहते थे लेकिन सरदार पटेल ने इस बात को स्वीकार नही किया था कि ऐसा किया जायें मेंने जब इसकी बैक ग्राउन्ड देखी तो पढ़े पर मालूम हुआ कि सरदार पटेल उस समय गृह मंत्री थे जिन्होंने इस दे ा पर महान उपकार किया है। पंडित नेहरू उस समय प्रधान मंत्री थे। जब सिक्किम के बारे मे प्रपोजल आई तो उनकी यह वर्डिंग थी–

"I do not want a small territory to be swallowed by a big country like ours".

लेकिन आज मुझे खु ाी है कि उसी प्रधान मंत्री की सुपुत्री ने प्रधान मंत्री होते हुए आज उन लोगो की डिमांड को स्वीकार किया है और उसी सिक्किम को आज भारत मे भाामिल किया जा रहा है। यह तो स्पीकर साहब ठीक है लेकिन दूसरी तरफ जो जम्मू क मीर के लोगों को स्पै ाल राइटस दियै जा रहे है, वह बात कुद अखरती है जम्मू क मीर के लोगो को उसी प्रकार के अधिकार और सिटिजनि ाप मिलनी चाहिए जो कि दे ा के दूसरे लोगों को मिली है। हम यह चाहते है कि आर्टिकल 370 को खत्म करके उनको भी सिक्किम की तरह दे ा का एक हिस्सा

मानना चाहिए। इन भाब्दों के साथ, स्पीकर साहब, मैं इस बिल का स्वागत करते हुए यह कहना चाहता हूं कि इस बिल को रैटिफाइ करके अव य भेजना चाहिए लेकिन उन बातों के साथ जो मैंने इस सदन के सामने आपके द्वारा रखी ।

श्री के.एन. गुलाटी (फरीदाबाद): माननीय अध्यक्ष महोदय, यह जो रैजोल्यू ान हमारे सामने अपने लीडर आफ दी हाउस ने रखा है, मैं तय दिल से उसकी ताईद करना चाहता हूं और आपकी मारफत अपने हाउस की तरफ से अपनी मारफत अपने हाउस से अपनी मजबूत प्रधान मंत्री को मुबारिकबाद देना चाहता हूं। हमारे भारत की संस्कृति, हमारे भारत की कल्चर और हमारे भारत के ऐडमिनिस्ट्रे ान को बाहर के लोगों ने भी माना और सिक्किम के लोगों ने उसे खु ाी से कबूल किया और चाहा कि उसे भारत का एक सूबा बनाया जाए। यह एक बड़ी भारी खु ाी की बात है। इस बात के द्वारा तो सचमुच सारे संसार मे हमारी प्रधान मंत्री ने भारत के नाम को ऊंचा किया हैं इसके लिए में दिल से उन्हें मुबारिकबाद देना चाहता हूं। इसके बाद, स्पीकर साहब, मैं अपने चीफ मिनिस्टर साहब को भी मुबारिक देना चाहता हूं क्योकि हर अच्छे काम मे ये पहल करते है। पार्लियामैंट मे बिल पास होने के बाद ग्यारह असैम्बलियों की रैटीफिके ान होनी है। इसके लिए इन्होंने सबसे पहले यह सै ान बुलाया और यह रैजोल्यू ान पास हो करके चला जाएगा।

इसके अलावा, स्पीकर साहब, मैं आपकी मारफत यह भी कहना चाहूंगा कि सिक्किम के इस फैसले से बाहर के कुछ मुल्कों, चीन और पाकिस्तान आदि के पेट मे दर्द लग रहा है। उनके लिए मैं यह कहना चाहता हूं कि–

''जलने वाले जला करें, किस्मत हमारे साथ है।''

स्पीकर साहब, मेरे कुद साथियों ने बोलते हुए कहा कि अगर यह पहले हो जाता तो और भी अच्छी बात होती। उनको भी एक मीठा सा जवाब मै देना चाहता हूं। फारसी की कहावत है कि–

''देर आयद दुरूस्त आयद।''

स्पीकर साहब, समय बलवान है। समय के मुताबिक सब बाते चलती है। तो अच्छी बात को अगर हम बगैर हीलो–हुज्जत, बगैर क्रिटिसिज्म किए, स्वागत करें तो बहुत अच्छा होगा। इनके दिल मे कुछ और हो और मेन मे कुछ और हो, तो बात अच्छी नही लगती तो स्पीकर साहब, इन अलफाज के साथ, मैं इस रैजाल्यू ान की ताईद करता हूं और सदन से प्रार्थना करता हूं कि हमारे लीडर आफ दी हाउस ने जो रैजोल्यू ान हाउस मे रखा है, उसको जल्दी से जल्दी पास कर देना चाहिए।

श्री अमर सिंह (बवानी खेड़ा–अनुसूचित जाति): स्पीकर साहब, आज हाउस के के सामने कांस्टिच्यू ान की 38वीं अमैंडमैंट, जो हमारी पार्लियामैंट के दोनों हाउसिज से पास हो

चुकी है, रैटिफिके ान के लिए है। मैं इसकी पुरजोर हिमायत करता हूं और स्वागत भी करता हूं। जब हम पढ़ते थे तो हिन्दुस्तान के भुमाल मे तीन स्टेटस ऐसी है जो चाईना बार्डर के साथ और हिन्दुस्तान बार्डर के साथ लगती है। जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ, उस वक्त दलाई लामा तो हिन्दुस्तान मे आ गए और तिब्बत जबरदस्ती चाईना ने हथिया लिया। दूसरी और भूटान और सिक्किम के लोग हिन्दुस्तान मे मिलना चाहते थे लेकिन राजनीतिक हालात की बिना पर उस समय वे हिन्दुस्तान मे भाामिल नही हो पाएं इसके फलस्वरूप बदस्तूर वहां की जनता मे यह आग भड़कती रही और बार बार उनकी यह ख्वाहि ा उभर कर सामने आती थी कि उन्हे हिन्दुस्तान मे मिलाया जाए लेकिन सिक्किम के चोग्याल, जो चाईना के एजेन्ट बने हुए थे, अपनी मनमानी करते रहे। अन्त मे एक दिन ऐसा आया कि सिक्किम की जनता चोग्याल के विरूद्ध खड़ी हुई। उसने उसे अपना राजा मानने से इंकार किया। वहां पापुलर गवर्नमैंट ऐस्टेब्लि ा हुई और सारे सिक्किम के मिनिस्टर्ज और बहुत सारे इम्पौर्टैंट वी.आई.पीज. हमारी प्रधान मंत्री से मिले और उन्होंने कहा कि वैसे तो उन्हें हिन्दुस्तान मे पच्चीस वर्श पहले मिलना चाहिए था लेकिन अगर अब भी उन्हें ठुकराया गया तो वह इन्सानियत के नाते से कुठाराघात होगा। प्रधान मंत्री ने अपना वि ाल हृदय दिखाया और सिक्किम के लोगों को छाती से लगाया और उसके परिणामस्वरूप आज यह बिल रैटिफिके ान के लिए सदन के सामन हैं मैं, जैसा मैंने भुाय मे कहा, इसकी पुरजोर हिमायत करता हूं। मैं यह समझता हूं कि

सिक्किम के लोगों को वही अधिकार हैं जो आंध्र प्रदे ा और हरियाणा आदि के लोगों को है। इसी तरह का स्टेटस उनका होगा। वह हिन्दुस्तान की बाईसवीं स्टेट होगी और वहां उसी तरह का राज चलेगा जिस तरह का राज दूसरी स्टेटस का चलता है। मेरे कुछ साथियों ने, स्पीकर साहब, कुछ कांस्टिच्यू ानल आपत्तियां जाहिद की हैं लेकिन मैं उन्हें बताना चाहता हूं कि उन बातो के बारे मे तो पार्लियामैंट के दोनो हाउसिज मे पहले ही छानबीन हो चुकी है और उसके बाद ही यह बिल दोनों हाउसिज से पास हुआ है। मै तो समझता हूं कि इस स्टेज पर कोठ भी आपत्ति उठाना उचित नही है। कानूनी बिना पर भी वे निराधार है। तो मैं यह चाहता हूं कि जो बिल हाउस के सामन रैटिफिके ान के लिए पे ा है उसको हम यूनानिमसली पास कर दे। स्पीकर साहब, मैं तो यह भी महसूस करता हूं कि हिन्दुस्तान मे मिट्टी का बना कोई भी ऐसा इन्सान नही हो सकता जो सिक्किम के अलहाक का स्वागत न करे। जो ऐसा इंसान हिन्दुस्तान मे है वह हिन्दुस्तानी नही है। इसलिए मैं फिर दुबारा यह दोहरात हूं कि रेटिफिके ान के लिए जो बिल हमारे सामने है इसको हमे यूनानिमसली पास करना चाहिए क्यौंकि यह बहुत ही सराहनीय कदम है। इन भाब्दों के साथ, स्पीकर साहब मै अन्त मे इसका फिर स्वागत करता हूं।

चौधरी पीर चंद (बरवाला अनुसूचिज जाति): माननीय अध्यक्ष महोदय, आज जो बिल सिक्किम का हमारे सामने है, मै

इसकी पुरजोर ताईद करता हूं। इसमे भारत के लिए वह खु ाी की बात है जो आज से बहुत दिन पहले हो जानी चाहिए थी। आज सिक्किम भारत का अंग बनने जा रहा है। उन लोगों की भावनाओं को कबूल करके, उन लोगों के जजबात को अपने हृदय से लगा करके, हमारी भारत सरकार ने बहुत ही तारीफ योग्य काम किया है और मैं इसका बड़े भारी जोर से स्वागत करता हूं। मैं इसे सरकार की फराख दिली और हिम्मत की बात समझता हूं लेकिन इसके साथ ही साथ मैं सरकार के नौटिस मे यह बात भी लाना चाहता हूं कि दूसरी तरफ कुछ इलाका ओर जो अभी भारत का अंग बनना बाकी है। वह इलाका पहले का मीर के साथ था लेकिन बादमे कट करके पाकिस्तान मे चला गया। मै इस हाउस के द्वारा भारतीय सरकार से निवेदन करता हूं कि उस इलाके को भी भारत मे मिलाने के लिए या तो पाकिस्तान की सरकार से बात करे या दूसरे दे ाो की तमाम पंचायत के सामने यह मसला रख करके उसे भारत का अंग बनवाया जाए क्योकि आज से 27 साल पहले पाकिस्तान ने नाजायज तौर पर उसे भारत से हथियाया हुआ है। आज हालत यह है कि कुछ लोगो के रि तेदार तो पाकिस्तान मे बैठे हुए है जब हक वे स्वयं हिन्दुस्तान मे है। पाकिस्तान वाले लोग चाहते है कि वे हिन्दुस्तान मे मिलें और हिन्दुस्तान वाले चाहते है कि वह इलाका हमारा अंग बने लेकिन मैं यह नही समझ पाता कि किस वास्ते भारत सरकार अपने आप को कमजोरी मे महसूस करती है। इस दि ाा मे सरकार को जल्दी कदम उठाना चाहिए क्योंकि तभी वे बच्चे जो उधर पाकिस्तान मे बैठे है और

जिनके मां बाप हिन्दुस्तान मे है, चैन का सांस ले सकेंगे। अंत मे मैं फिर इस सरकार से यह निवेदन करता हूं कि पाकिस्तान के अंदर जो का मीर का इलाका बदा हुआ है, उसे जल्दी से जल्दी भारत का अंग बनाने के लिए यह गौर करे। इतना ही कहकर मै इस बिल का समर्थन करता हूं।

चौधरी प्रताप सिंह दौलता (बेरी): स्पीकर साहब, यह प्रस्ताव पार्लियामैंट ने पास किया और यहां पर रैटिफिके ान के लिए भेजा है, मै इसको वैलकम करता हूं और मुझे खु ाी है कि जिस तरीके से मुखालफित करते हुए अपोजी ान ने ट्रिब्यूट पे ा किया, उससे ज्यादा ट्रिब्यूट गवर्नमैंट आफ इंडिया को और तरीके से दिया नही जा सकता। एक आनरेबल मैंबर ने कहा कि पहले तो अन नसैस्रीली डीले की और फिर बाद मे बहुत जल्दी यान हरी की।

जो लोग हिन्दुस्तान के कांस्टीच्यू ान को जानते है।, उनके हरफों को ही नही, उसकी स्पिरिट को भी जानते है, वे जानते है कि हिन्दुस्तान कोई एम्वायर बिल्डर मुल्क नही। हिन्दुस्तान कभी भी एम्पायर बिल्डर मुल्क नही हुआ। आज दोनों पार्लियामैंटो ने जो प्रस्ताव पास किया है, वह हिन्दुस्तान के लोगों ने ही किया है। जो कुछ, जितने तरीके से, सिक्किम स्टेट के बा ान्दे जिस हद तक जो चीज चाहते रहे, उससे आग हिन्दुस्तान ने कुछ भी नही किया। मेरे दिल मे पंडित नेहरू जी के लिए बड़ी इज्जत है लेकिन आज जो इन्होंने पढ़ कर सुनाया

उससे वह इज्जत और भी बढ़ी। 1947 मे जब इंडिया इन्टीग्रेट किया जा रहा था, उसमे एक बहुत बड़े महा पुरूश सरदार पटेल का हाथ था। सिक्किम बाकी रियासतों से बिल्कुल मुख्तलिफ थी। सिक्किम ब्रिटि ा हिन्दुस्तान की रियास्त कभी नही थी। सिक्किम प्रोटेक्टोरेट स्टेट थी। प्रौटेक्टोरेट का हिन्दी या उर्दू के माने का मुझे पता नी लेकिन सिक्किम प्रौटेक्टोरेट थी, स्टेटस लैवल पर कभी थी ही नही। यह बात कहना कि सिक्किम के लोग तो उस वक्त भी हिन्दुस्तान मे भाामिल होना चाहते थे, यह इग्नोरैंस थी। उस वक्त सब तरह की ओपीनीयन थी। फ्यूडलिज्म का ढांचा इतना मजबूत था यही चोग्याल की इंसटीच्यू ान जिसे अबौलि ा किया जा रहा है, उसकी लोग इस तरह से इज्जत करते थे जैसे कि बेवकूफ जाट लोग महाराजा भरतपूर की करते है और सरदार साहिबान महाराजा पटियाला की व उन बुजुर्गो की जो अय्या ा थे और कहते है 'साडी रियासत, साडी रियासत' एक हालत वह भी थीं यह पब्लिक आपीनीयन जो अब सिक्किम मे क्रियेट हुई है यह 1947 के दिनों मे और उसके बाद नही थी। अब मे यह पूछना चाहता हूं कि कौनसा कांस्टीच्यू ानल विहकल था जिसके द्वारा वहां की हम पब्लिक आपीनियन जान लेते। 1950 तक तो सिक्किम मे कोई भी किसी किस्त की रीप्रेजेंटेटिव इंसटीच्यू ान नही थी। पब्लिक ओपीनियन जाने का तरीका याह रैफरेन्डम जो चुनी हुई इंसटीच्यू ान होती हैं उनके जरिए ही होता है। यह उस वक्त वजूद मे ही नही थी। इसलिए उस स्टेज पर हिन्दुस्तान के बहुत बड़े महापुरूश जो कि इतनी बड़ी सल्तनत एरिया का प्राइम

मिनिस्टर था, अपनी कलम से यह लिखता है कि हम इस रियासत को ग्रैब नही करते। इससे वैटर सबूत हिन्दुस्तान की नेक–नियती का, इससे जयादाक्लीयर चपेट चाइना के फारन डिपार्टमैंट पर हो नही सकता। जिस वक्त हम फौजों से कब्जा कर सकते थे, हमने नही किया। हमने 14 वर्श तक इंतजार कियां हम हरी मे कभी नही थे क्योंकि जब तक उनकी जनता इजहार न करे we can't adopt Chinese way जो उन्होने तिब्बत मे किया। We can't adopt Pakistani way जो उन्होन पुंछ मे किया। हिन्दुस्तान मे जमहूरियत है और जो कुछ होना था वह कांस्टीच्यू ान के मुताबिक होना था । इसलिए कोई डिले नही हुई। हिन्दुस्तान ने एम्पायर बिल्डिंग के लिए कोई एक्सटैं ान नही की। जब जनता ने चोग्याल को उठाकर फैंका तो हमने एक्सैप्ट कर लिया इसलिए अमैंडमैंट आई। जब उन्होने हिन्दुस्तान मे भाामिल होने के लिए अपने ही mutual interest मे कहा तो हमारे दोनो रैप्रैजेंटेटिव इन्स्टीच्यू ान ने कांस्टीच्यू ान को अमैंड करके उसको भाामिल कर लिया, डिले नही की। यह हिन्दुस्तान का तहजीबयाफता तरीका है, कांस्टीच्यू ानल तरीका है जिससे इतने दिन लगें इसी तरह अप्रैल मे कोई हरी नही थी, जिस तरह लोगों के जजबात मार्च करते रहे, जिस तरीके पर लोगों के जजबात काम करते रहे, जो उन्होंने चहा, वह हुआ। इसमे न हरी हुई न डिले हुई और न नहरू ने जब यह लिखा कि हम छोटी सी एम्पायर को हड़म्प नही करना चाहते, उन्होने बड़ा अच्छा सर्टिफिकेट हिस्टरी के लिए दिया। चाईना के लिए सबक दे गये थे और मुल्कों के लिए भी अगर कोई ले तो।

दूसरी जो बात कही गइ कि गवर्नर को पावर ज्यादा दे दी, वे इस पहलू को भूल गये कि गवर्नर को इन हालात मे, स्पै ाल हालात मे पावर दी गई है लेकिन Governor is of the Centre जो पावर चोग्याल के पास थी, वह गवर्नर के पास चली गई। Chogyal was a feudal loard and Governor is always a part of central Government एकदम अपने कन्ट्रोल को कैसे छोड़ दे जब कि उन्होने अपने ऊपर इतनी भारी जिम्मेदारी ली है। एक नोट भी इस बारे मे नैक्सट पेज पर आनरेबल मैंबर ने जरूर पढ़ा होगां इतनी फायनैं ाल जिम्मेवारी हम अपने ऊपर ले रहे है उस मुल्क को डिवैल्प करने की, उस एरिया को डिवैल्प करने की तो गवर्नर को पावर दी जानी ही थी। Power of feudal lord and Governor of the Cenral Government are of quite different nature and there is no similarty between the two तो यह कहना कि बाकी गवर्नर्ज को भी कांस्टीच्यू न अमैंड करके इस तरह की पावर्ज है डैमोक्रेसी मे। हिन्दुस्तान की डैमोक्रेसी मे सिक्किम के गवर्नर को कुछ पावर देने मे कोई डर नही है। फिर एक बात जो की का मीर वाली, स्पीकर साहब.....

Mr. Speaker: That is not relevant. You need not repeat it.

चौधरी प्रताप सिंह दौलताः मैं रिपीट नही कर रहा हूं लेकिन जब वह बात रिकार्ड पर आ चुका है तो मैं उसका जवाब जरूर दूंगा।

श्री अध्यक्षः आपका जवाब देना कैसे जरूरी है ? (व्यवधान) का मीर का सिक्किम से कोई वास्ता नही।

चौधरी प्रताप सिंह दौलताः का मीर का सिक्किम से यूं वास्ता है कि इस रैटिफिके ान से जो फारन डिपार्टमैंट के बारे मे रैफरैंसिज किए गए है, उस मे कहा है कि का मीर मे गलती की जा रही है लेकिन मैं कह रहा हूं कि का मीर मे जो सरदार स्वर्ण सिंह जो सिक्किम और का मीर की प्रौब्लम सौलव कर गए, उसके लिए इस मुल्क को उनका हमे ाा के लिए म ाकूर होना चाहिए। इसके अलावा इस का मीर का कोई और सोल्यू ान ही नही था जो सोल्यू ान अब किया जा रहा है। यह सिक्किम की लाइनों की तस्वीर है। उनकी (का मीर) स्पै ाल पावर्ज खत्म करना, उन लोगों का अपना काम है। अगर का मीर के लोग कहेगे कि स्पै ाल पावर्ज खत्म कर दो, अगर वे असैम्बली का रैजोल्यू ान पास करेंगे भोख अब्दुल्ला की रहदुमाई मे तो हिन्दुस्तान वही करेगा जो सिक्किम मे किया है। सिक्किम मे जो कुछ हुआ है उसके लिए हर हुब्बल वतन हिन्दुस्तान को खु ा होना चाहिए। Kashmir problem is also being solved by that great foreign departent which ahs solved Sikkim problem. का मीर की प्रौब्लम मे वे लोग डिफिकल्टी क्रिएट करते है, स्पीकर साहब, जो का मीर के मुसलमानों को यह एहसास देते है कि अगर हिन्दुस्तान मे चले गये तो हिन्दुस्तान की जो कम्यूनल फिरकाप्रस्त पार्टीज है वे उनको खा जाएंगी। इसलिए का मीर को

हिन्दुस्तान मे न आने देने के लिए वे लोग जिम्मेवार है जो हिन्दुस्तान मी मजौरिटी कम्यूनिटी से बिलौंग करते है।

Mr. Speaker: Order please. You need not discuss Kashmir here.

चौधरी प्रताप सिंह दौलता: का मीर को तो मै डिस्कस नही कर रहा स्पीकर साह मै तबक्कों कर रहा हूं इसी किसम का रैजोल्यू ान within a year मै बिल्कुल खु ाफहमी मे हूं इसके मुताल्लिक, within a year. इसी किसम का रैजोल्यू ान आने वाला है, आएगा और वह भी बड़ी भारी कामयाबी होगी। इन अलफाज के साथ मैं इस प्रस्ताव को वैलकम करता हूं और मैं हाउस मे अर्ज करूंगा कि इस मे कोई किसी किस्म की कांस्टीच्यू ानल डिफिकल्टी नही । इसका तो सवाल ही पैदा नही होता। कोई गलती ही नही है। क्योकि जब पार्लियामैंट के दोनो हाउसिस ने इसे पास कर दिया तो हमे इअमैंडमैंट का तो हक ही नही है। या तो इसको रैटिफाई/स्पोर्ट करे या रिजैक्ट करे। मुझे खु ाी है कि हिन्दुस्तान मे डी.एम.के. ने तड़क का वैल्कम किया है और यह हिन्दोस्तान की इंटेग्रे ान की तरफ सिक्किम की अपनी खाहि ा के मुताबिक, सिक्किम के अपने इंट्रैस्ट मे बेहतरीन कदम है। इन अलफाज के साथ मै इसकी ताईद करता हूं।

चौधरी ि ाव राम वर्मा (नीलोखेड़ी): आदरणीय स्पीकर साहब, संविधान के आर्टिकल 368 (2) के अधीन संविधान (38वीं अमैंटमैंट) बिल, 1975 सिक्किम के बारे मे पार्लियामैंट के दोनों

सदनों से पास होकर इस सभी के समर्थन के लिए, अनुमोदन है लिए आया है। जहां तक इस अमैंडमैंट का संबंध है, मै इसका हार्दिक स्वागत करता हूं। यह दे ा के लिए बहुत अच्छी बात है। जो दे ा का हिस्सा अलग थलग किन्ही कारणों से था, इस बारे मे मैं ज्यादा विवरण नही देना चाहता हूं लेकिन वह किन्ही कारणों से अलग रहा, वह अभी भाामिल हुआ है, बहुत अच्छी बात है। सिक्किम का दे ा मे विलय होने के बारे मे कोई भी दे ा का व्यक्ति यह बात मन मे नही ला सकता कि यह बात ठीक नही है। बल्कि इससे तो हरेक व्यक्ति को प्रसन्नता हुई है। जिस ढंग से इसका अब विलय हुआ है, यह बहुत पहले ही हो जाना चाहिए था लेकिन उसमे थोड़ी सी देरी लगी है। इसके साथ साथ जिस तरह से अब विलय किया गया है, पहले विधान सभा ने प्रस्ताव रखा, उसके बाद फिर रैफरैन्डम यानी राय भुमारी की बात हुई हौर फिर इसका इतना बढ़ा चढ़ा कर प्रचार किया गया, यह कोई अच्छी अच्दी बात नही लगती। किसी माननीय सदस्य ने तो इस ढंग से भी कहा कि जब कोई दूसरी स्टेट ऐसा प्रस्वात करेगी तो हम करेंगे। इसलिये मेरा कहना यह है कि इस तरह की बाते करना दे ा के लिये खतरनाक भी हो सकता है क्योंकि अगर हम ऐसी बात जो हमारे प्रान्त है, सूबे है या जो हमारे इलाके है या जो हमारी असैम्बलियां है, उन्ही पर छोड़ दे और सोचें कि राय भुमारी से कोई इलाका दे ा का हिस्सा बनेगा तो इससे एक बहुत खतरनाक भावना लोगो के अन्दर आ सकती है। इस तरह से तो कोई भी स्टेट इस प्रकार का असैम्बली का प्रस्ताव पास

कराकर और रैफरैन्डम कराकर केंद्र के सामने अपने आपको अलग रखने के लिये भी प्रस्ताव भेज सकती है हालांकि हमारे संविधान मे अलग होने के लिये ऐसी कोई बात नही है परन्तु इस तरह से एक कठिनाई हमारे सामने खड़ी हो सकती है। जिस प्रकार से हम लोगों के अन्दर खेड़े होकर यह कहते है कि हमने सिक्किम तब मिलाया जब वहां के लोगो ने राय भ्ाुमारी से हमे यह कहा, यह ठीक नही है। इस तरह का प्रचार करना लोगों के मन मे उथल–पुथल पैदा कर सकता है और जिन लोगों के मन मे अलाहिदा होने की भावना है, उनको एक अवसर प्रदान कर सकता है। इसवास्ते इस तरह से एक खतरनाक रूझान आ सकता है। मेरा कहना यह है कि इसका बहुत अधिक प्रचार नही करना चाहिए, बल्कि इसको बेस या बुनियाद नही मानना चाहिए कि इसी ढंग से कोई इलाका दे ा का हिस्सा बनेगा। जिमना कुछ इस पर कहा जा चुका है, मै समझता हूं उसको यही समाप्त किया जाना चाहिए और यही कहा जाना चाहिए कि यह हमारे दे ा का ही एक हिस्सा था। यह एक अलग बात है कि दे ा से दे ा मे मिला लेकिन मिल गया, यह एक अच्छी बात है।

इसके साथ ही दूसरे इलाकों की बात भी यहां आयी। जो इलाके हमसे अलाहिदा रह गये है, उन इलाकों के बारे मे भी बिना किसी बात का इंतजार किये कि वहां की असैम्बली प्रस्ताव करने के लिये सरकार को प्रयत्न करना चाहिए। जैसे सिक्किम मिला है, इस से भी अच्छे ढंग से वे इलाके हमसे मिल सकते है।

यहां पर का मीर का जिक्र भी आया। एक दे ा के अन्दर दो प्रधान और एक संविधान जो हो गया है, इससे कभी न कभी दे ा के अन्दर कठिनाई खड़ी हो सकती है। इसलिये इसको बहुत जल्दी समाप्त किया जाना चाहिए। जो इलाका हमारा चीन के कब्जे मे पड़ा है, उसको वापिस लेने के लिये भी कोई न कोई कार्यवाही सरकार को करनी चाहिए। तिब्बत जो हमारा हिस्सा था, बहुत पहले हमारे से चला गया हालांकि वहां के हुक्मरान और वहां की जनता हमारे साथ रहना चाहती थी। हमारी सरकार की ढिलाई और लापरवाही से गया, इसके बारे मे मैं डिटेल मे नही कहना चाहता। जैसे मेरे साथी राम लाल जी ने कहा है, जो वहां के गवर्नर को अधिक अधिकार दिये गये है, वे अधिकार ठीक नही है। उसको भी दूसरे गवर्नरों की तरह ही अधिकार मिलने चाहियें यहां पर बार बार यह बात कही जाती है कि यह बिल दोनो हाउसिज आफ पार्लियामैंट से पास होकर आया है। इसका यह मतलब नही है कि हम इसके ऊपर कोई नुक्ताचीनी नही कर सकते और इसमे अगर कोई कमी हो तो वह हम बता नही सकते अगर यह बात होती तो यह बिल यहां भेजने का कोई मतलब ही नही था। इसका मतलब ही यह है कि यहां पर भी सभी मुद्दों पर अच्छी तरह से मन्थन करके, अच्छी तरह से सोच विचार करके अगर इसके अन्दर कोई कमियां दिखाई देती है तो उनको सुधारे जाने के लिये आपके द्वारा यह सदन केंद्रीय सरकार यानी पार्लियामैंट या राश्ट्रपति को सलाह दे सकता है कि इसके अन्दर यह यह कमियों

है, इसलिये इनको ठीक किया जाना चाहिएं फिर उनको कानूनी ढंग से ठीक किया जा सकता है।

वे बातें जो मैंने थीड़ी इ ाारे के रूप मे कही है, इनकी तरफ मैं सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं ताकि वह इन्हे केंद्रीय सरकार के ध्यान मे लाये। अगर हम इसको ही बेस या बुनियाद बनाकर चले तो इससे दे ा के सामने कई कठिनाइयां पैदा हो सकती है। आ ाा है मेरी बातों के ऊपर विचार होगा, इन भाब्दों के साथ मैं इसका स्वागत करता हूं। धन्यवाद।

Mr. Speaker: Question is—

That this House ratifies the amendements to the Constitutionof India falling withing the purview of the proviso to clause (2) of article 368 thereof proposed to be made by the Constitution (Thirty Eighth Amendemnt) Bill, 1975, as passed by the two Houses of Parliaments, which seeks to make Sikkim a State in the Union and the Short title of which as been changed into "the Constitution (Thirty Six Amendemnt) Act. 1975.

The motion was carried.

दी फरीदाबाद कम्पलैक्स (रेगुले ान एंड डिवैल्पमैंट) अमैंडमैंट एण्ड वैलीडे ान बिल, 1975

Irrigation & Power Minister (Shri Banarsi Dss Gupta): Sir I beg to introduce the Faridabad Complex

(Regulation and Development) Amendment and Validation Bill 1975.

Mr. Speaker: If the House agrees, the resolution regarding the disapproval of the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Ordinance, 1975 (Haryana Ordinance No. 3 of 1975) and the motion that the Faridabad Complex Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be taken into consideration be discussed together and voted upon separately.

Vice: Yes.

Chaudhri Ram Lal Wadhwa (Karnal): Sir, I beg to move—

That this House disapproves the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Ordinance, 1975 (Haryana Ordinance No. 3 of 1975)

Mr. Speaker: Motion moved—

That this House disapproves the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Ordinance, 1975 (Haryana Ordinance No. 3 of 1975).

Sh. Banarsi Dass Gupta: Sir, I beg to move—

That the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker: Motion moved—

That the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be taken into consideration at once.

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल): स्पीकर साहब, आर्डीनैंस गजट मे छपा और उसमें स्टेटमैंट आफ आब्लैक्टस एंड रीजन्ज नही होते इसलिये फौरी तौर पर यह पता नही लग सकता कि इस आर्डीनैंस के पीछे सरकार का क्या मन ाा हैं उसको सामने रखते हुए मैंने यह डिसएप्रूवल का नोटिस भेजा था परन्तु अब जो बिल हमारे सामने पे ा हुआ है और उसमे जो स्टेटमैंट आफ आब्जैक्टस एंड रीजन्ज दिया हुआ है, उसमे मैंने यह देखा है, उसमे यह लिखा है:

".....It has now transpired that some area of village Ballabgarh did not from part of the Faridabad Complex although the Faridabad Complex Administration had all along treated this area as its part. the situation so amerging has now posed some administrative and fiscal dificulties. With a view to tide over these difficulties and to regularise the actions of the Faridabad Complex Administration taken so far in relation to this area, if has been considered necessary to include this area within the Faridabad Complex....."

(इस समय उपाध्यक्ष पदासीन हुई)

तो इसमे बात छोटी सी रह गयी कि कुछ एरियाज ऐसे थे जो फरीदाबाद कम्पलैक्स के अन्दर समझे तो जाते थै लेकिन वह उसमें भाामिल नही थे। तो बल्लभगढ़ के कुछ विलेजिज के

बारे मे जो लैकूना रह गया था, उसको पूरा करने के लिये यह आर्डीनैंस जारी किया गया और उसको रिप्लेस करने के लिये आज हमारे सामने एक बिल प्रस्तुत हुआ है। मैं समझता हूं इसमे मुझे कोई आपति नही हो सकती कि फरीदाबाद कम्पलैक्स के अन्दर कुछ और विलेजिज आते है या कुद ऐडी ान्ज या आल्ट्रे ान्ज करना चाहता हूं। लेकिन इसके साथ ही मैं एक दो बाते आपके द्वारा सरकार के नोटिस मे लाना चाहता हूं। सरकार ने फरीदाबाद कम्पलैक्स को स्वीकार किया और फरीदाबाद कम्पलैक्स बनाया। मगर आज फरीदाबाद कम्पलैक्स को बने हुए इतने साल हो गये लेकिन जिस मकसद के लिये फरीदाबाद कम्पलैक्स बनाया गया, उस एरिया की डिवैल्पमैंट का जो आइडिया या मन ाा था, वह पूरा नही हुआ। इसके पीछे एक मं ा था कि यह जो बिखरा हुआ एरिया है इसे मिलाकर हमने फरीदाबाद को एक इंडस्ट्रियल टाउन की भाक्ल मे सारे दे ा के अन्दर एक नमूना बनाकर पे ा करना था और उसके साथ ही एरिया की डिवैल्पमैंट के लिए कालोनीज बनाकर वहां पर जो इंडस्ट्रीज की लेबर है या दूसरे लोग है, उनको रैजिडेन्ि ायल क्वार्टर्ज प्रोवाईड करना था। लेकिन हमने पिछले सालों मे देखा है कि वहां जिस प्रकार से विकास होना चाहिए, वह न होकर उल्टा विकास के अन्दर गतिरोध उत्पन्न हो रहा है। कई केस मेरे नोटिस मे आए है कि एग्रीकल्चरल लैंड या दूसरी जमीन कम्पलैक्स मे ली गई लेकन उनको कम्पनसे ान नही दिया गया। ऐसे केसिज भी हमारे नोटिस मे आए है जहां पर लोगों ने प्लाटस के लिए पूरे पैसे दे रखे है लेकिन उनको प्लाट

का पोजै ान आज तक नही दिया गया। कुछ एम्पलाइज भी पीछे जिक्र कर रहे थे कि हमसे पूरा पैसा ले रखा है लेकिन अभी तक प्लाट अलाट नही किए गए है। फरीदाबाद कम्पलैक्स बनाने का मतलब यह था, कि डिवैल्पमैंट तेजी से होनी चाहिए न कि काम्पलैक्स बनने से जो डिवैल्पमैंट हो रही थी, वह भी रूक जाए। फरीदाबाद मे टाउन म्यूनिसिपैल्टी है, उसका एरिया अलग है, एक सभा हैउसका एरिया अलग है और फरीदाबाद एडमिनिस्ट्रेटर अलग है। म्यूनिसिपैल्टी और सभा जो डिवैल्पमैंट करना चाहती थी, वह भी अब नही कर पा रही है क्योकि फरीदाबाद के ऐडमिनिस्ट्रे ान को तेजी के साथ सारे इलाके की डिवैल्पमैंट करनी चाहिए। मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि वह वहां पर जल्दी ही डिवैल्पमैंट कराएं और इसके लिए दो एक सुझाव देना चाहता हूं। पहली बात तो यह है कि हरियाणा जो एक छोटी सी स्टेट है और उसके अन्दर जो देहाती इलाके है उन सब की डिवैल्पमैंट होनी चाहिए। यह नही होना चाहिए कि फरीबाबाद के सारे गांवों की जमीन, एग्रीकल्चरल लैंड जो सोना देने वाली है उसको लेकर फरीदाबाद काम्पलैक्स मे भाामिल कर लिया जाए और वहां पर ही इंडस्ट्रीज खड़ी कर दी जाएं, केवल वहां पर ही रैजिडैन्ि ायल कालोनीज बने। अच्छा यह होगा कि हर डिस्ट्रिक्ट के अन्दर इंडस्ट्री पनपें हर जगह पर इंडस्ट्रीयल ऐस्टेट बननी चाहिए। देहातों के अन्दर इंडस्ट्रीज खुलनी चाहिए। और वहां पर उन किसानों के बच्चों को, जिनकी जमीन थोड़ी है, कोई दूसरा काम नही मिलता, काम

मिलना चाहिए। एक जगह पर ही सारी इंडस्ट्रीज इकट्ठी नही करनी चाहिए।

दूसरी बात जो मैं कहना चाहता हूं वह यह है कि ओल्ड फरीदाबाद की कमेटी अलग, फरीदाबाद टाउन की अलाहिदा, सभा अलाहिदा, बल्लभगढ़ एडमिनिस्ट्रे ान अलाहिदा और फरीदाबाद एडमिनिस्ट्रेन अलाहिदा। उनकी बजाए वहां पर एक कार्पोरे ान बना दी जाए तो उसका सारा काम ठीक ढंग से हो सकता है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने कुछ सुझाव फरीदाबाद काम्पलैक्स के बारे मे आपके द्वारा सरकार के सामने रखे है। मैं आ ाा करता हूं कि सरकार इन पर गौर करेगी। बाकी जहां तक डिसऐप्रूवल के मो ान का सवाल है उस पर मै ज्यादा जोर नही देता क्योकि उसमे एक लकूना था जो कि बिल मे आबजैक्ट्स एंड रीजन्ज देकर रिमूव कर दिया है और अब मुझे वह मौ ान विदड्रा करने मे कोई आपति नही हैं मैं अपने इस मो ान को विदड्रा कर लेता हूं। लेकिन मैं सरकार से कहूंगा कि फरीदाबाद काम्पलैक्स जिस मं ाा से बनाया गया था, उसके अन्दर तेजी से काम हो और एक ही जगह पर सारी इंडस्ट्रीज कंसन्ट्रेट न करके हरियाणा के सारे कोनो मे फैलायी जाए। इतना ही कहकर मैं समाप्त करता हूं।

श्री के.एन. गुलाटी (फरीदाबाद): डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो फरीदाबाद काम्पलैक्स (रैगुले ान एंड डिवैल्पमैंट) अमैंडमैंड एंड वैलिडे ान बिल, 1975 आया है, यह बहुत अच्छा

बिल है। मैं उस इलाके को अच्छी तरह समझता हूं और मेरे साथी ने जो दो तीन बाते कही है, वे बिल्कुल गलत है। उनको उस इलाके के बारे मे कोई इल्म नही है कि क्या कहना है फरीदाबाद के मुताल्लिक मैं बहुतत जानता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, मेरे साथी ने आखिर मे कहा कि फरीदाबाद म्यूनिसिपैल्टी अलाहिदा, बल्लभगढ़ मयूनिसिपल कमेटी अलाहिदा, सभा अलग, फरीदाबाद ऐडमिनिस्ट्रे ान अलाहिदा। यह बिल्कुल बेबुनियाद बात है। तीन साल से फरीदाबाद ऐडमिनिस्ट्रे ान है। सारा इलाका काम्पलैक्स ऐडमिनिस्ट्रे ान के अन्डर है और एक ही ऐडमिनिस्ट्रे ान इस इलाके मे सारा इलाके के सारे काम को देखता है। इसके बाद उन्होंने कह कि काम्पलैक्स ने कुछ काम नही किया। मै। फरीदाबाद से एम.एल.ए. हूं और पिछले तीन साल से हाउस के अन्दर सारी बाते बता रहा हूं। चोधरी राम लाल यह सुनकर हैरान होंगे कि वहां कितनी तरक्की हुई है। फरीदाबाद का जो चीफ ऐडमिनिस्ट्रेटर है वह एक ईमानदार और यंग आफीसर है और चीफ मिनिस्टर साहब और गुप्ता जी को पिछले दो तीन साल से जब से काम्पलैक्स बना है, मै फरीदाबाद की तकलीफों को बड़े जोर से, चिल्ला चिल्लाकर बता रहा हूं। मैं तीन बाते आपकों गिकनशता हूं कि कितने मार्के की चीजें वहां हुई है। सब से पहले काम्पलैक्स ने वहां पर मिल्क प्लांट के लिए जगह दी और मिल्क प्लांट वहां लग रहा है, दूसरी चीज अगर कोई फरीदाबाद के नक ो को देखे तो पता लगेगा कि रोड़ज बना रही है, डबल रोड़ज बन रही है, पार्क्स बन रहे है (व्यवधान) मच्छरों की बाबत

भी बताता हूं। डिप्टी स्पीकर साहिबा, जब से मैंने मच्छरों का नाम लिया है (व्यवधान) जरा गौर से आप लोग सुनिए।हमारे चीफ मिनिस्टर ने मेहरबानी की, चीफ ऐडमिनिस्ट्रेटर ने मेहरबानी की, आप लोगों को सुनकर खु ाी होगी कि एक कम्पनी से एक एग्रीमैंट किया है। 16 तारीख स काम्पलैक्स मे स्प्रे होने जा रहा है और यह 20 जून तक होगा। इससे एक तिहाई मच्छर खत्म हो जाएंगे। छः महीने तक एक मच्छर दिखाई नही देगा और अगर कोई मच्छर हुआ तो कम्पनी को पेमैंट नही होगा..... (व्यवधान) यह अच्छी बात तो कहते नही है कि सरकार कोई अच्छा काम कर रही हैं खमखाह चिल्लाते रहते है। पिछले दो सालों मे काम्पलैक्स ने स्कूलों मे तरक्की की है, अस्पतालों मे तरक्की की है, स्कूलों मे कमरे बढ़े है। डिप्टी स्पीकर साहिबा, काम्पलैक्स के अन्दर 17–18 गांव भाामिल है। कुछ और इलाका भाामिल होने से रहा गया था और बिल मे अमैंडमैंट उसको काम्पलैक्स मे भाामिल करने के लिए लाई गई है। यह इलाका 1885 मे अंग्रेजों के अन्डर था और 1915 मे यह किसी वजह से यह इलाका काम्पलैक्स मे भाामिल होने से रह गया। अब यह इलाका बड़ी तेजी के साथ काम्पलैक्स के अन्डर तरक्की कर रहा है। इस काम्पलैक्स मे तीन भाहर है और 17 गांव है और है जब यह इलाका इसमें भाामिल हो जाएगा तो सारा काम्पलैक्स दिन दुगुनी और रात चौगुनी तरक्की करेगा। हर गांव मे बिजली पहुंचाई गई, स्ट्रीट लाईट दी गई है। देहात के भाई इस काम्पलैक्स से फायदा उठा रहे है। वहां पर एक ओवरब्रिज भी बनाने जा रहे है। उस ओवरब्रिज की चीफ मिनिस्टर ने मंजूरी दे

दी है। हरिजन कालोनी भी काम्पलैक्स मे बनाने जा रहे है और मेरा ख्याल है कि हमारे चीफ मिनिस्टर साहब या कर्नल साहब उस कालोनी की बुनियाद रखेंगे। डिप्टी स्पीकर साहिबा, होना तो यह चाहिए कि जहां कोई खराबी है उसको दूर करने के लिए सुझाव देने चाहिए न कि हर वक्त नुक्ताचीनी करनी चाहिए। यह जो अमैंडमैंट बिल आया है, यह बिल्कुल सही है। बगैर किसी हीलोहुज्जत के इसको पास कर देना चाहिए। मुझे खु ाी है कि जो थोड़ा सा इलाका म्यूनिसिपल लिमिट के बाहर था, वह इस अमैंडमैंट के जरिए इसमे भााामिल हो जाएगा। इतना कहकर मैं समाप्त करता हूं।

सिंचाई एंव बिजली मंत्री (श्री बनारसी दास गुप्त): उपाध्यक्ष महोदया, जैसा कि अभी सदन के सामने बतलाया गया, यह बड़ा साधारण सा सं ाोधन है और इस सं ाोधन मे एक और सं ाोधन जिस सम्माननीय सदस्य ने रखा, आपके सामने उसने इस बात को स्वीकार किया है कि सरकार की कुछ बातो की ओर ध्यान दिलाने कि लिए उन्होंने यह सं ाोधन रखा था और से वापस लेने मे भी उन्हों कोई आपति नही है। उपाध्यक्ष महोदया, यह सं ाोधन केवल एक कानूनी कमी को पूरा करने के लिये सदन के सामने प्रस्तुत किया गया है। जिस वक्त इसका नोटीफिके ान हुआ तो बल्लभगढ़ म्यूनिसिपल ऐरिया को उसमे भााामिल कर लिया गया लेकिन बल्लभगढ़ के साथ कुछ गांव थे जो उस नोटीफिके ान से कवर नही होते थे पर काम्पलैक्स

उनको अपना हिस्सामानता रहा और उनके साथ ऐसा ही व्यवहार करता रहा जैस कि वह काम्पलैक्स का ही एक भाग हो लेकिन जब देखा गया तो वास्तव मे उस नोटीफिके ान से वह इलाका कवर नही होता था अतः उस कमी को पूरा करने के लिये बहुत भीघ्र ही एक आर्डीनैंस जारी करना पड़ा क्योंकि ऐसी सम्भावना बन चुकी थी कि यदि कुछ भाई अदालत मे चले जाते तो काम्पलैक्स को उससे बड़ा भारी नुक्सान होगा। आज उसी आर्डीनैंस को एक सं ाोधन के रूप मे सदन के सामने प्रस्तुत किया गया है। चौधरी राम लाल जी, जो हमारे सदन के सम्माननीय सदस्य है, उन्होंने कुछ बातो की ओर सरकार का ध्यान दिलाया है। इस बात से मैं बिल्कुल सहमत नही हूं कि काम्पलैक्स बनने के बाद फरीदाबाद मे या काम्पलैक्स एरिया मे कोई विकास का कार्य नही हुआ है। जैसा कि गुलाटी साहब जो कि वहां का प्रतिनिधित्व करते है, ने भी इस सदन मे कहा कि वहां पर विकास के बहुत सारें कार्य जारी हो चुके है और उन पर बहुत तेजी के साथ काम हो रहा हैं उपाध्यक्ष महोदया फरीदाबाद के मच्छरों को लेकर, आप को अच्छी तरह से याद है कि सदन मे एक मजाक चलता रहा है परन्तु वह मजाक की बात नही है बल्कि फरीदाबाद मे बसने वाले लोगों के लिये यह एक बड़ी भारी लानत है। आपको यह जानकर खु ाी होगी कि उस लानत को खत्म करने के लिये काम्पलैक्स एडमिनिस्ट्रे ान बड़ी तेजी के साथ काम कर रहा है। जैसा कि अभी स्प्रे की बात बतलाई गई, वह स्प्रे की बात एक आरजी प्रबंध है, एक अस्थाई प्रबंध है लेकिन उसके लिये

परमानैंट इंतजाम भी किया जा रहा है और वह परमनैंट इंतजाम यह है कि फरीदाबाद टाऊनि ाप मे एक ऐसा कच्चा और गन्दा नाला है जहां पर माम फैक्टरियां का गन्दा पानी आता है और वह एक तरह से मच्छरों का ब्रीडिंग सैंटर हुआ हैं उस नाले को पक्का किया जा रहा है कि उस तमाम गन्दे पानी को सीवरेज मे डालकर उसका इस ढंग से डिस्पोजल किया जा रहा है कि आज जो पानी न्यू सैन्स बन कर रहा गया है वहां के लोगों के लिये, उस पानी से काम्पलैक्स एडमिनिस्ट्रे ान को बड़ा भारी फायदा होगा और उस पानी का खेती के लिये उपयोग किया जाएगा। तो सब से बड़ा फरीदाबाद काम्पलैक्स जो काम कर रहा है, वह यह कर रहा है और इसके इलावा वहां पर पीने के पानी की कमी हैं वहां हर वाटर सप्लाई की बड़ी बड़ी स्कीमें बनाई गई और उन स्कीमों को कार्यन्वित करने के लिये काफी धन खर्च किया जा रहा है। सड़के भी बनाई गई है और गांवों के अन्दर भी बड़ी तेजी के साथ विकास के कार्य हो रहे है। उपाध्यक्ष महोदया, आप जानती है कि जो गांव पहले पंचायत एरिया मे पड़ते थे, पंचायत के साधन बड़े सीमित है, उनके सुविधा प्रदान कर सकें लेकिन आपको जान कर प्रसन्नता होगी कि फरीदाबाद काम्पलैक्स एडमिनिस्ट्रे ान ने उन ग्रामों के अन्दर भी विकास का काम किया है क्योकि काम्पलैक्स के पास आय के बड़े बड़े साधन है, कितने उद्योग धन्धे लगे हुए है, कितने वहां पर कमर्ि ायल सैन्टर्ज है, उन सब से बड़ा भारी मुनाफा होता है। वह आमदनी केवल फरीदाबाद टाऊनि ाप मे ही खर्च नही की जाती बल्कि कम्पलैक्स का जितना क्षेत्र है, चाहे ग्राम

हो, चाहे कस्बा हो, उन सब मे खर्च किया जा रहा है तो उपाध्यक्ष महोदया, मै आपके द्वारा इस सदन को और वि ोश रूप से चौधरी राम लाल जी को वि वास दिलाना चाहूंगा कि काम्पलैक्स का एडमिनिस्ट्रे ान लोगों को हर प्रकार की नागरिक सुविध्णा प्रदान करने के लिये बड़ी तेजी के साथ काम कर रहा है और भाायद चौधरी राम लाल जी की जानकारी यह यह बात नही है कि वहां पर तीन प्रकार की कमेटियां नही है न फरीदाबाद ओल्ड मे, न बल्लभगढ़ मे कोई कमेटी है और न ही टाऊनि ाप मे कोई कमेटी है। तमाम एडमिनिस्ट्रे ान काम्पलैक्स का एडमिनिस्ट्रे ान है। फरीदाबाद ओल्ड मे उनका एक ही एडमिनिस्ट्रेटर है, बल्लभगढ़ मे लोगो की सुविधा के लिये एडमिनिस्ट्रेटर है ताकि वहा काम एडमिनिस्ट्रे ान वहां पर ही कर सके और काम्पलैक्स एडमिनिस्ट्रेटर का जो दफ्तर है वह फरीदाबाद टाऊनि ाप मे है। तो मैं उनकी जानकारी के लिये बताना चाहता हूं कि अलग–अलग कमेटिया नही है। एक ही एडमिनिस्ट्रे ान है और एक ही एडमिनिस्ट्रे ान के द्वारा ही यह काम चलता है और इसके अलावा चौधरी राम लाल जी की एक बाज मैं मानता हूं। जो उन्होने सुझाव दिया है कि सारा कन्सन्ट्रे ान फरीदाबाद मे नही होना चाहिए।

चौधरी पीर चंदः उपाध्यक्ष महोदया, मेरा प्वायंट आफ आर्डर है। जैसा कि मंत्री महोदया ने कहा कि एडमिनिस्ट्रेटर लगाया हुआ है। मैं यह जानना चाहता हूं कि म्यूनिसिपल कमेटिया

कहां–कहां है जहां कि म्यूनिसिपल कमेटियों के मैंबर है वह कौन कौन से इलाके है?

श्री बनारसी दास गुप्तः उपध्यक्ष महोदया, यह जिकर फरीदाबाद काम्पलैक्स का है, सारे हरियाणा का जिकर नही है। जब सारे हरियाणा का जिकर आयेगा तो वह भी बताऊंगा। तो मैं यह निवेदन कहर रहा था कि चौधर राम लाल जी का जो सुझाव है वह बड़ा अच्छा सुझाव है और वह पूरी तरह से सरकार के ध्यान मे है। सरकार इस बात की पूरी कोि ा ा कर रही हैं जब नये उद्योग धन्धे वाले व इंडस्ट्री वाले प्लाट के लिये आते है तो उनको सलाह दी जाती है, पराम र्ा दिया जाता है कि हरियाणा मे अन्य स्थानों पर जो उद्योग बस्तियां बन रही है,उन मे अपना प्लाट लेकर इंडस्ट्री लगाओ। वहां और सैक्टर बढ़ाने के लिये प्रोत्साहन नही दिया जाता लेकिन जो सैक्टर बन चुके है उन को तो जरूर आबाद करना ही है। उनको आबाद करने के लिये, उनको सुविधा देने के लिये पूरी तरह से हमारा एडमिनिस्ट्रे ान काम्पलैक्स जागरूक है और वह पूरी तरह से काम कर रहा है। तो इन भाब्दो से मैं आपके द्वारा सदन के सम्माननीय सदस्यों से यह प्रार्थना करता हूं कि यह साधारण सा सं ाोधन है, इस को एक मत से सर्वसम्मति से पास कर दिया जाए।

Deputy Speaker: Is it the pleasure of the House that motion of Qhaudhri Ram Lal be withdrawn?

Vices: Yes

The motion was, by leave of the House, withdrawn.

Deputy Speaker: Question is—

That the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Deputy Speaker: The House will now take up the Bill clause by clause.

Sub-clause 2 of Clause 1

Deputy Speaker: Question is—

That sub-clause (2) of clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 2

Deputy Speaker: Question is—

That clause 2 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 3

Deputy Speaker: Question is—

That clause 3 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 4

Deputy Speaker: Question is—

That clause 4 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 5

Deputy Speaker: Question is—

That clause 5 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 6

Deputy Speaker: Question is—

That clause 6 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Sub-clause (1) of Clause 1

Deputy Speaker: Question is—

That sub-clause (1) of clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Enacting Formula

Deputy Speaker: Question is—

That Enacting Formula be the Enacting Formula of the Bill.

The motion was carried.

Title

Deputy Speaker: Question is—

That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Irrigation and Power Minister (Sh. Banarsi Dass Gupta): Madam, I beg to move—

That the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be passed.

Deputy Speaker: Motion moved—

That the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be passed.

Deputy Speaker: Question is—

That the Faridabad Complex (Regulation and Development) Amendment and Validation Bill be passed.

The motion was carried.

दी पंजाब अरबन इम्मूवेबल प्रापर्टी टैक्स (हरियाणा अमैंडमैंट) बिल, 1975

Excise and Taxation Minister (Shri Shyam Chand): Madam, I beg to introduce the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, 1975.

I also beg to move—

That the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, be taken into consideration at once.

Deputy Speaker: Motion moved—

That the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, be taken into consideration at once.

चौधरी राम लाल वधवा (करनाल): डिप्टी स्पीकर साहिबा, पहले तो मुझे आपके द्वारा यह निवेदन करना है कि मैंने जो अगले दोनों बिल्ज है उनके आर्डीनैंसिज की डिस्एप्रूवल के बारे मे नोटिस दिये है और वह नोटिस इसलिये यहां नही आये होंगे क्योंकि एजैंडा पहले छप चुका होगा लेकिन इसमे एक सदस्य का कोई कसूर नही है। मैं आपके द्वारा यह बात नोटिस मे लाना चाहता हूं कि हमारे रूल्ज मे यह प्रोविजन है, उसे पढ़कर सदन का समय नही लेना चाहता, कि जब कोई आर्डीनैंस होता है तो फौरी तौर पर उसकी कापियां मैंबरान को भेजी जाये। आप देखें पांच तारीख को आज सै ान हो रहा है और तीन तारीक्ष को आर्डीनैंसिज की कापियां मैंबरान को भेजी गई है और उसी वक्त मैंने उनकी disaproval के नोटिस भेज दिए थे। मैं इस बात को

ज्यादा प्रैस नही करना चाहता और बिलों पर बोल लूंगा लेकिन मैं चाहता हूं कि आप अपने सैक्रेटेरियेट को इस बारे मे कहें कि जब आर्डीनैंस फरवरी मे हो गया, मार्च मे हो गया तो उसके बाद सारा अप्रैल खत्म हो गया लेकिन इनकी कापियां मैंबरान को क्यों नही भेजी गई? उसी वक्त भेजनी चाहिए थी जिससे कि मैंबरान उनको पढ़ लेते .....

उपाध्यक्षाः बात यह है कि आर्डीनैंस गजट मे छप जाते है और गजट की कापियां सभी मैंबरान के पास पहूंच जाती है।

चौधरी राम लाल वधवाः अगर यह बात हे तो रूल्ज असैम्बली के बनाने की क्या जरूरत है ? एक आदमी के पास गजट आता है, फर्ज करो वह वहां नही है या वह उसको देख नही सकता लेकिन रूल्ज मे प्रोविजन के अनुसार आर्डीनैंस की कापी जानी चाहियें रूल्ज बनाने की क्या जरूरत है फिर तो सारा कुछ वैसे ही जान लेंगे मैंबर साहिबानं * * * * (विघ्न)

Deputy Speaker: I my tell the hon. Member that as soon as an ordinance is promulgated, it is published in the Gazette, a copy of which is sent to all the members. A copy each of the ordinances has also been sent.....

Chaudhri Ram Lal Wadhwa: Has been sent on what date? That reached us on the 3rd May.....

Deputy Speaker: It will be seen in the office. later on I will inform you.

चौधरी राम लाल वधवा: आज पांच को सै ान है, तीन तारीख को इसका एजैंडा हमें मिला है और उसी के साथ इन आर्डीनैंस की कापियां मिली है। खैर मैं आपका हुक्म मानता हूं।

तो डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो बिल इस वक्त सदन के सामने पे ा है, मैं इसका जोरदा विरोध करता हूं। इस बिल की स्टेटमैंट आफ आब्जैक्टस एंड रिजंज मे लिख है:—

"In order to rais efunds for the Kurukshetra University the Governor of Haryana promulgated the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Ordinance, 1975 (Haryana Ordinance No. 2 of 1975), under which, for the period commencing on the 1st April, 1975 and ending with the 31st March, 1980, a surcharge at fifty per centum of ther rate of tax notified under sub-section (1-A) of section 3 of the Punjab Urban Immovable Property Tax Act, 1940, was livied in addition of the tax leviable unde the said sub-section.

The Bill seeks to replace the said Ordinance."

डिप्टी स्पीकर साहिबा मै दो बाते आपके द्वारा सदन के सामन रखना चाहता हूं। एक तो यह कि इस प्रकार से यह टैक्स थोड़े अर्से के लिये किसी खास पर्पज के लिये लगाते वक्त यह कहना कि देखो सरकार लोगों पर टैक्स का बोझ नही लादना चाहती है सिर्फ साद दो साल के लिये किसी खास मक्सद के लिये कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी की डिवैल्पमैंट के लिये लगा रही है थोड़े अर्स के लिये लेकिन दूसरी तरफ लोगो की आंखों मे धूल डानी जा

रही है। और अमैंडमैंटस ला कर इसे लगातार आगे बढ़ाया जा रहा है और प्रापर्टी टैक्स पर पचास फीसदी सरचार्ज और आगे पांच साल के लिये लगा दिया है। अगर सरकार मे जुरर्त है तो फिर क्यों नही वह सीधे तरीके से टैक्से ान का बिल ला कर लोगों पर टैक्स लगा देती है और इस प्रकार से क्यों लोगों पर बोझ डाला जा रहा है। एक तरफ तो यह ढिंढोरा पीटा जाता है कि सरकार कोई नया टैक्स नही लगा रही है लेकिन दूसरी तरफ इस तरह से लोगों पर टैक्स का बोझा लादा जाता है। मुझे खु ाी है कि मैंने तीन दफा यह बात सदन मे रखी थी कि एक ही जायदाद पर दो किसम का टैक्स, हाउस टैक्स और प्रापर्टी टैक्स नही होना चाहिये और इस बारे अभी पीछे मिनिस्टर साहब का स्टेटमैंट आया था कि सरकार इन दोनो टैक्सों को एक करने जा रही है। वह बात जब होगी तो उस वक्त देंखेगे कि किस भाकल मे वह बात आती है लेकिन अब मैं यी कहना चाहता हूं कि सरकार अगर कोई टैक्स लगाना चाहती है तो सीधे तरीके से लगाये और बिल लाये लेकिन किसी पर्जज का नाम लेकर टैक्स लगाना और फिर उसे आगे से आगे बढ़ाते रहना ठीक बात नही है। कल मिनिस्टर्ज के टूर्ज के लिये पैसे की जरूरत होगी तो फिर इस पर्पज के लिये सरचार्ज लगा देंगे यह तरीका गलत है। सरकार जो भी टैक्स लगाती है वह सारा पेसा कन्सौलीडेटिड फंड मे जाता है और उस फंड मे से हमारे सामने रूपया बजट मे आता है कि कितना रूपया किस मद पर खर्च करना है और इस बारे मे सारी डिटेल होती है। लेकिन अब इस तरीके कसे बिल ला कर सदन के

सदस्यों को गुमराह करना और जनता को गुमराह करने की कोि ा ा करना ठीक नही है एक तरफ तो यह कहना कि जनता पर कोई टैक्स नही लगाया जा रहा है और दूसरी तरफ जो एक टैक्स किसी खास पर्पज का नाम लेकन साल दो साल के लिये लगाया गया था, उसे इस तरह के बिल लाकर सालो साल तक आगे बढ़ाते रहना जनता को गुमराह करने वाली बात नही तो और क्या है? आज हरियाणा की जनता पर पहले ही टैक्सों का बहुत भार है। यह सरकार 1968 मे आई और कहते है कि इस ने 1968 से 1974 तक बहुत काम किया और बहुत विकास के काम कर दिये लेकिन हम जब सड़कों के बारे मे पूछते है कि फलां सड़क बीच मे ही रहा गई, वह कब पूरी होगी तो कहते है कि फंडज नही है। उस समय जनता पर 33 करोड़ रूपये के टैक्स हुआ करते थे लेकिन पिछली जनवरी को जो बजट आया है उसमे 154 करोड़ रूपये के टैक्स जनता पर लादे गये है। अब फिर यह बिल लेकर आये है कि कुरूक्षे यूनिवर्सिटी के लिये रूपया चाहिये लेकिन मैं पूछता हूं कि वह टैक्सों का रूपया कहां गया और क्या इस काम के लिये कंसौलीडेटिड फंड से रूपया नही आ सकता था जो इस तरह से लेने की कोि ा ा की जा रही है ? कल को पंचायत की बिल्डिंग बनानी है तो कहेंगे कि इस के लिये फलां टैक्स पर सरचार्ज लगाते है, मार्किट कमेटी की कोई बिल्डिंग बननी है तो कहेंगे कि मार्किट फी पर सरचार्ज लगाते है। यह तो कोई तरीका नही है टैक्स लगाने का। इन अलफाज के साथ मैं इस बिल का विरोध करता हूं और सरकार से कहता हूं कि वह हरियाणा की

जनता की हालत पर रहम करे और इस बिल को वापल ले क्योंकि हरियाणा की जनता पहले ही टैक्सों के नीचे बहुत दबी हुई है।

चौधरी दलसिंह (जींद): डिप्टी स्पीकर साहिबा, यह जो अिल सरकार ने सदन के सामने पे ा किया है इसके जरिये सरकार पंजाब अर्बन इम्पूवेबल प्रापर्टी टैक्स ऐक्ट, 1940 की धारा 3 को तरमीम कर रही है और पांच साल के लिये इस सरचार्ज की म्याद बढ़ा रही है और यह टैक्स या सरचार्ज 1980 तक लगाना चाहती है। जब भी बजट आता है तो सरकार की तरफ से एलान होता है कि सरकार कोई टैक्स जनता पर नही लगायेगी लेकिन अभी बजट पास हुये डेढ़ महीना ही हुआ है कि एक आर्डीनैंस जारी कर दिया कि प्रापर्टी टैक्स पर सरचार्ज 1975 से 1980 तक और पांच साल के लिये बढ़ा दिया जाये। अगर ऐसी बात थी तो उसी वक्त बजट के वक्त ही जनवरी मे क्यों नही यह बात सदन के सामने लाई गई और अब डेढ़ महीने के बाद आर्डीनैंस जारी करके उसे छापने और सरकुलेट करने पर हजारों रूपये खर्च कर दिये और अब यह तरमीमी बिल पे ा कर दिया है। गवर्नमैंट द्वारा गल्त खर्च करना और गवर्नमैंट की गजल नीजियों से हरियाणा का दिवाला निकल रहा है जिसकी वजह से हरियाणा की जनता पर टैक्सों का भार बढ़ता जा रहा है जिसकी कहीं सुनवाई नही है। स्पीकर साहब, इन्होंने फाइने ियल मैमोरैंडम के अन्दर कहा है– "The additional expenditure involved, therefore, would be nominal."

अगर यह 'न' के बराबर होगा तो टैक्स लगाने की क्या जरूरत है और इस टैक्स को पास साल के लिए बढ़ाने की क्या जरूरत है। पहले जब यह टैक्स मास किया था तो उसमे कहा गया था कि यह पैसा कुरूक्षेत्र के लिए चाहिए और 1975 तक कर लिया और अब फिर दोबारा अगले पांच साल तक करने जा हरे हैं म्यूनिसिपल कमेटीज तो आज कल अपनी हदूद को बढ़ाती रहती है और नोटिफिके ान जारी करती रहती है कि फलां एरिया भामिल किया जाए। बहुत सी म्यूनिसिपल कमेटीज ने अपनी हदूद को बढ़ा दिया है जिसकी वजह से तमाम खेती करने वाली जमीन, एग्रीकल्चर लैंड, हजारों बीघे उसमें भाामिल होती है। जस जमीन के ऊपर प्रापर्टी टैक्स है और उस पर सरचार्ज लगता है, लैंड होल्डिंग टैक्स भी लगता हैं आप देखं, एक ही जमीन के ऊपर कितने ही टैक्स हो गए है। उस जमीन पर डबल टैक्स हो गया हैं यह जो टैक्स लगाने की नीति है यह गलत नीति है। इसकी आड़ मे ये यही बात कहते है, एक ही बड़ाई करते है कि हम टैक्स लगाने वाले नही है लेकिन यह बात निराधार है। हमे टैक्स लगाने मे बहुत ज्यादा दिक्कत नही है अगर ढेग से प्रापर्टी टैक्स लगाया जाए। सरकार कम से कम यह गारंटी जरूर दे कि तमाम जमीन पर जिस पर खेती की पैदावर होती है, किसान खेती करता है और वह खेती जिस पर पहले से ही टैक्स लगा हुआ है, ऐसी जमीन को दूसरे टैक्सों से एग्जैम्पट किया जाए। सरकार एक कानून पास करे कि जिस जमीन पर खेती होगी उस पर प्रापर्टी टैक्स और सरचार्ज टैक्स नही होगा। आप सब को एक ही डंडे से

हांकना चाहते है, ऐसा नही होना चाहिए। इन अल्फाज के साथ मैं इस बिल की पुरजोर मुखालफत करता हूं क्योंकि यह एंटी–किसान और अनडेमोक्रेटिक है।

श्री के.एन. गुलाटी (फरीदाबाद): डिप्टी स्पीकर साहिबा, हर मैंबर के अपने अपने विचार है। मैं हाउस के सामने दो मिनट के लिए अपने विचार रखूंगा। यह जो प्रापर्टी टैक्स का अमैंडिंग बिल है, यह बिल्कुल सही है और यह पुराना टैक्स है, नया नही है। मैं सदन मे बैठे भाइयों से पूछता हूं कि डिवैल्पमैंट के काम बिना पैसे से कैसे होंगे ? फिर यह भी कहते है कि तेजी से काम करने के लिए पैसा चाहिए। इसके इलावा आप यह भी जानते है कि एडमिनिस्ट्रे ान पर भी खर्चा बढ़ा है, महंगाई भी बढ़ी है, इसके लिये पैसे को आव यकता हैं लेकिन इसके साथ साथ डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं एक सुझाव देना चाहता हूं। अगर सरकार इस अमैंडिंग बिल के साथ साथ हाउस टैक्स और प्रोफै ानल टैक्स को प्रोपर्टी टैक्स मे मर्ज कर देते और प्रोपर्टी मे मर्ज कर देते और प्रापर्टी टैक्स को रिवाईज कर देते तो बड़ी खु ाी की बात होती। वाकई आज इस बात की आव यकता है, पब्लिक की बड़ी भारी डिमांड है कि प्रोफै ानल टैक्स और हाउस टैक्स को प्रापर्टी टैक्स मे मर्ज कर दिया जाए। अगर ऐसा होता तो मुझे खु ाी होती लेकिन मैं जानता हूं कि यह अमैंडमैंट सरकार थोड़ी देन बाद ले आएगी। यह जो सरचार्ज लगाया है यह बिल्कुल सही है क्योंकि यह कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी की तरक्की के

लिए लगाया गया है जो कि एक नई किस्म की यूनिवर्सिटी है। अगर इसकी तरक्की होगी तो हमारी स्टेट की तरक्की होगी इसलिए इस बिल पर खहमखाह मे बोलना अच्छा नही है लेकिन हर एक की अपनी अपनी मर्जी है। मैं इसकी ताईद करता हूं और सदन से प्रार्थना करता हूं कि इसको इत्तफाक राय से पास किया जाए।

आबकारी एवं कराधार मंत्री (श्री भयाम चंद): डिप्टी स्पीकर साहिबा, जैसा कि गुलाटी साहब ने बता या है कि यह नया टैक्स नही है, पुराना है, मैं सदन को बताना चाहता हूं कि इस पर सरचार्ज लगाने की जरूरत क्यों पड़ी कि इसको अगले पांच साल के लिए बढ़ा दिया जाए। सारे आनरेबल मैंबर्ज को पता है कि हरियाणा के जितने कालेजिज थे, वे पंजाब यूनिवर्सिटी से एफिलिएटिड थे। लेकिन पिछले साल से यह कालेजिज कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी मे मिला दिए गए है। ज्वांयटपंजाब मे कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी की इतनी डिवैल्पमैंट नही हुई थी जिमनी होनी चाहिए थी। इसकी डिवैल्पमैंट करने के लिए रूपये की जयरत थी। यही वजह हे कि प्रापर्टी टैक्स के ऊपर 50 फीसदी सरचार्ज लगाया जाकि उसकी डिवैल्पमैंट हो। वहां पर बिल्डिंग्ज बननी है, स्टाफ की जरूरत है, लैबोरेटरी का सामान लेना है। इसके लिए यह बिल सरकार हाउस के सामने लाई है। इस साल क्योंकि सारे हरियाणा के कालेजिज कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी से एफिलिएटिड हो गए है, अब यह यूनिवर्सिटी रैजिडैंि ायल यूनिवर्सिटी नही रही बल्कि

एफिलिएटिड यूनिवर्सिटी है इसलिए फंडज की कमी होना जरूरी है। इस कमी को पूरा करने के लिए, डिवैल्पमैंट करने के लिए सरकार अगले पांच साल तक इस सरचार्ज को आगे बढ़ाना चाहती है। जहां तक चौधरी राम लाल जी के औब्जैक ान का ताल्लुक है कि टैक्स पर टैक्स लगा रहे है, यह गलत बात है, यह नया टैक्स नही है मैं सदन की इंफर्मे ान के लिए इतना ही बता देना चाहूंगा कि 1971–72 मे 27 लाख रूपया, 1972–73 मे 26 लाख रूपया, 1973–74 मे 29 लाख रूपया और 1974–75 मे 33 लाख रूपया सरचार्ज लगातार इसी डिवैल्पमैंट के लिए सरकार ने दिया हैं। अगर 30–35 लाख रूपये का टैक्स जनता पर बोझ लगता है और चौधरी राम लाल जी कहते है कि सरकार जनता को गुमराह करती है तो यह अच्छी बात नही है। हम सरचार्ज इसलिए लगाते है ताकि वहां पर एजुके ान का फैलाव हो। चौधरी राम लाल जी को बता देता हूं कि हम जनता को गुमराह नही करते बल्कि जनता को पढ़ाते है। प्रापर्टी टैक्स और हाउस टैक्स को मर्ज करने के बारे मे पहले ही आपने पेपर मे पढ़ा होगा, यह काम भी बिल्कुल active consideration मै हे कि इनको मर्ज करके एक टैक्स बना दे और जितनी भी दिक्कतें है, मैं समझता हूं इससे उनका हल होगा। इन भाब्दों के साथ मैं आनरेबल मैंबर्ज से रिक्वैस्ट कंरूगा कि इस बिल को पास किया जाए।

About House Tax and Property Tax, we will try to see that the difficulties are removed and both these taxes are

merged. With these words, I request the hon. Members to pass this Bill.

Deputy Speaker: Question is—

That the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Deputy Speaker: The House will now take up the Bil clause by clause.

Clause 2

Deputy Speaker: Question is—

That clause 2 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 3

Deputy Speaker: Question is—

That clause 3 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 1

Deputy Speaker: Question is—

That clause 1 stand part of the Bill.

The motion was carried.

Enacting Formula

Deputy Speaker: Question is—

That Enacting Formula be the Enacting Formula of the Bill.

The motion was carried.

Title

Deputy Speaker: Question is—

That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Sh. Shyam Chand: Madam, I beg to move—

That the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, be passed.

Deputy Speaker: Motion moved—

That the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, be passed.

Deputy Speaker: Question is—

That the Punjab Urban Immovable Property Tax (Haryana Amendment) Bill, be passed.

The motion was carried.

दी इंडियन इलैक्ट्रसिटी (हरियाणा अमैंडमैंट एण्ड वैलीडे ान)

बिल, 1975

Irrigation and Power Minister (Sh. Banarsi Dass Gupta): Madam, I beg to introduce the Indian Electricity (Haryana Amendement and Validation) Bill, 1975.

I also beg to move—

That the Indian Electricity (Haryanam Amendment and Validation) Bill be taken into consideration at once.

Deputy Speaker: Motion moved—

That the Indian Electricity (Haryanam Amendment and Validation) Bill be taken into consideration at once.

Deputy Speaker: Question is—

That the Indian Electricity (Haryanam Amendment and Validation) Bill be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Deputy Speaker: The House will now take up the Bill clause by clause.

Clause 2

Deputy Speaker: Question is—

That clause 2 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 3

Deputy Speaker: Question is—

That clause 3 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 4

Deputy Speaker: Question is—

That clause 4 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 5

Deputy Speaker: Question is—

That clause 5 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 6

Deputy Speaker: Question is—

That clause 6 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Clause 1

Deputy Speaker: Question is—

That clause 1 stands part of the Bill.

The motion was carried.

Enacting Formula

Deputy Speaker: Question is—

That Enacting Formula be the Enacting Formula of the Bill.

The motion was carried.

Title

Deputy Speaker: Question is—

That Title be the Title of the Bill.

The motion was carried.

Sh. Banarsi Dass Gupta: Madam, I beg to move—

That the Indian Electricity (Haryanam Amendment and Validation) Bill be passed.

Deputy Speaker: Motion moved—

That the Indian Electricity (Haryanam Amendment and Validation) Bill be passed.

Deputy Speaker: Question is—

That the Indian Electricity (Haryanam Amendment and Validation) Bill be passed.

The motion was carried.

Deputy Speaker: The House stands aduourned till 2 P.M. tomorrow.

(The Sabha then adjourned till 14.00 O'clock on Tuesday, the 6th May, 1975.)*